BANASTHALI VIDYAPITH

Master of Arts (Hindi)

Curriculum Structure

First Semester Examination, December, 2020
Second Semester Examination, April/May, 2021
Third Semester Examination, December, 2021
Fourth Semester Examination, April/May, 2022

BANASTHALI VIDYAPITH
P.O. BANASTHALI VIDYAPITH
(Rajasthan)-304022

July, 2020

75

No. F. 9-6/81-U.3

Government of India
Ministry of Education and Culture
(Department of Education)

New Delhi, the 25th October, 1983

N O T I F I C A T I O N

In exercise of the powers conferred by Section 3 of the University Grants Commission Act, 1956 (3 of 1956) the Central Government, on the advice of the Commission, hereby declare that Banasthali Vidyapith, P. O. Banasthali Vidyapith, (Rajasthan) shall be deemed to be a University for the purpose of the aforesaid Act.

Sd/-
(M. R. Kolhatkar)
Joint Secretary of the Government of India

N O T I C E

Changes in Bye-laws/Syllabi and Books may from time to time be made by amendment or remaking, and a Candidate shall, except in so far as the Vidyapith determines otherwise, comply with any change that applies to years she has not completed at the time of change.

© BANASTHALI VIDYAPITH

Sl. No.	Contents	Page No.
1	Programme Educational Objectives	4
2	Programme Outcomes	6
3	Curriculum Structure	8
4	Evaluation Scheme and Grading System	11
5	Syllabus	13

शैक्षणिक उद्देश्य

वनस्थली विद्यापीठ के पंचमुखी शिक्षा पद्धति के अंतर्गत छात्राओं के बहुमुखी व्यक्तित्व निर्माण हेतु विभाग के स्नातकोत्तर कार्यक्रम में भाषा एवं साहित्य का विस्तृत आलोचनात्मक एवं विश्लेषणपरक अध्ययन कराया जाता है। हिन्दी भाषा के सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक विस्तार, उसके परिष्करण के विशिष्ट सैद्धांतिक नियमों के विश्लेषण के बाद राष्ट्रभाषा बनने और राष्ट्रभाषा बनने के उपरांत प्रयुक्ति परक प्रयोजनमूलक रूप धारण कर विश्वभाषा बनने की संभावनाओं का अध्ययन प्रस्तुत कार्यक्रम में कराया जाता है। भाषाई रूप में हिन्दी के पास भारत की सभ्यता का अथाह संवेदनात्मक कोश मौजूद है। अपनी 17 बोलियों के विकास में युगीन परिस्थितियों का विकासात्मक सहयोग हिन्दी ने स्वयं अर्जित किया है। यही कारण रहा है कि स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी साहित्य और साहित्यकारों ने सक्रिय भूमिका निभाई है। जिसका खंडगत और वैज्ञानिक अध्ययन मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में महत्वपूर्ण ही नहीं आवश्यक भी है। हिन्दी भाषा की भांति ही इसके साहित्य ने भी युगीन प्रवृत्तियों को केवल प्रतिबिम्बत ही नहीं किया है, बल्कि उसके परिवर्तन का भी आह्वान किया है। आदिकाल के वीर एवं श्रृंगारपूर्ण रचनाओं के भंडार के बाद लोकजागरण की प्रवृत्ति हिन्दी की इसी क्षमता को दर्शाती है। आधुनिक गद्य विधाओं के माध्यम से नवजागरण भी हिन्दी साहित्य की ही देन रहा है। लगभग 1000 वर्षों का अथाह साहित्य भंडार भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक एकता के साथ ही आधुनिक भारत के निर्माण का साहित्यिक साक्षी रहा है। हिन्दी साहित्य अब प्रवासी साहित्य के माध्यम से विश्व के विभिन्न देशों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। जिसका प्रतिनिधित्यात्मक अध्ययन प्रस्तुत पाठ्यक्रम में निहित है।

हिन्दी विभाग के एम.ए कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं –:

- हिन्दी भाषा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ ही भारोपीय भाषा परिवारों में हिन्दी के विकास और स्थान का प्रवृत्तिमूलक अध्ययन कराना।
- देवनागरी लिपि के मानकीकरण तथा संगणक व टंकण के अनुरूप उसकी विशिष्ट स्थिति का अध्ययन कराना।
- हिन्दी भाषा का आधुनिक भाषा वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर वैज्ञानिक अध्ययन।

- विभिन्न कालखण्डों में उद्भूत साहित्यिक प्रवृत्तियों, उनके परिप्रेक्ष्य में तत्युगीन राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का अभिज्ञान कराना।

- हिन्दी पत्रकारिता के उद्भव–विकास, संचार माध्यमों में हिन्दी की भूमिका, समाचार लेखन एवं संपादन के सैद्धांतिक आयामों का अध्ययन कराना।

- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के समीक्षा सिद्धांतों का अध्ययन एवं विशिष्ट समीक्षकों की शैलियों का विश्लेषणात्मक विवेचन कराना।

- भारतीय साहित्य एवं हिन्दीतर भाषाओं के अनूदित साहित्य के अध्ययन से अन्य भारतीय भाषाओं की साहित्यिक परंपरा से परिचित कराना।

- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में आये परिवर्तनों का तद्युगीन परिप्रेक्ष्य में आलोचनात्मक अध्ययन कराना।

- प्रवासी साहित्य के माध्यम से विभिन्न देशों में हिन्दी लेखन से परिचित कराना।

- वैकल्पिक स्वाध्याय के माध्यम से छात्राओं में स्वअध्ययन एवं विश्लेषण की समझ विकसित करना।

- शोध प्रविधि के विभिन्न सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों का अभिज्ञान कराना।

- हिन्दी साहित्य में सृजनात्मक लेखन के प्रति छात्राओं में अभिरूचि जागृत करना।

- लघु शोध प्रबंध के माध्यम से शोध की आधारभूमि को तैयार करना।

अपेक्षित परिणाम

- **भाषा वैज्ञानिक अभिज्ञान :** हिन्दी भाषा के उद्‌गम की सांस्कृतिक परिस्थितियों के अभिज्ञान के साथ ही आधुनिक भाषा वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर समझ विकसित होगी।

- **साहित्यिक विधाओं का परिज्ञान :** उपरोक्त पाठ्यक्रम के माध्यम से हिन्दी काव्य के साथ ही आधुनिक गद्य की समस्त विधाओं यथा, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना, व्यंग्य, रिपोर्ताज, संस्मरण, जीवनी आदि समस्त विधाओं से परिचय के साथ ही उनके समीक्षात्मक विश्लेषण की क्षमता छात्राओं में विकसित होगी।

- **काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन का ज्ञान :** आलोचना साहित्य की कसौटी मानी जाती है। उपरोक्त पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्राओं में साहित्य की समझ के साथ ही भारतीय काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों एवं पाश्चात्य साहित्यालोचन पद्धतियों के आधार पर विश्लेषण की क्षमता का विकास होगा।

- **स्वाध्याय की प्रवृत्ति :** कार्यक्रम में सम्मिलित स्वाध्याय वैकल्पिक पाठ्यक्रम के माध्यम से उनमें साहित्य की विभिन्न विधाओं के स्वअध्ययन और मनन की प्रवृत्ति बढ़ेगी।

- **साहित्यिक अभिरूचि :** साहित्य न केवल सामाजिक प्रतिबिम्ब होता है, अपितु यह मानव मन के परिष्करण का हेतु होता है। पाठ्यक्रम में चयनित रचनाओं के माध्यम से छात्राओं की साहित्यिक अभिरूचि विकसित होगी।

- **सृजनात्मक क्षमता का विकास :** विधाओं के अध्ययन–मनन एवं विवेचन के माध्यम से छात्राओं में सृजनात्मक क्षमता का उत्पन्न की जाती है। कथात्मक आधार भूमि, विशिष्ट लेखन शैली, अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों का विकास होगा।

- **संचार माध्यमों के अनुरूप लेखन :** पत्रकारिता पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राओं में वर्तमान जनसंचार माध्यमों में समाचार लेखन, संपादन एवं मीडिया के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों का अभिज्ञान और लेखन क्षमता विकसित होगी।

- **नैतिक मूल्यों का विकास :** साहित्य के अध्ययन के माध्यम से छात्राओं में नैतिक मूल्यों का विकास होता है। मानवीय गुणों के उत्कृष्ट भावों का संचरण होता है जो एक स्वस्थ समाज के निर्माण का आधार बनेगा।

- **शोध प्रवृत्ति :** कार्यक्रम में शोध प्रविधि के अध्ययन एवं परियोजना कार्य के तहत लघु शोध–प्रबंध तैयार करने से शोध की आधारभूमि की समझ और उसकी व्यावहारिक समस्याओं एवं उनके समाधान का ज्ञान होगा।

- **रोजगारोन्मुखता :** हिन्दी राष्ट्रभाषा होने के साथ ही आधुनिक समय में शैक्षणिक, प्रशासनिक, जनसंचार माध्यमों के अलावा विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार सृजित कर रही है। इसके साथ ही विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में भी हिन्दी माध्यम के प्रति रूचि की वृद्धि हुई है। पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्राओं को उपरोक्त क्षेत्रों में रोजगारोन्मुखता का लाभ मिलेगा।

Curriculum Structure

Master of Arts (Hindi)

First Year

Semester-I

Course	Code	Course Name	L	T	P	C*
HIND	407	कथा साहित्य	5	0	0	5
HIND	403	भक्तिकालीन काव्य	5	0	0	5
HIND	410	हिन्दी भाषा एवं लिपि	5	0	0	5
HIND	404	भारतीय काव्यशास्त्र	5	0	0	5
HIND	402	आदिकालीन काव्य	5	0	0	5
		Semester Total:	**25**	**0**	**0**	**25**

Semester-II

Course	Code	Course Name	L	T	P	C*
HIND	408	रीतिकालीन काव्य	5	0	0	5
HIND	405	भाषा विज्ञान	5	0	0	5
HIND	411	आधुनिक कविता	5	0	0	5
HIND	409	शोध–प्रविधि	5	0	0	5
CS	421	Introduction to Computer Applications	3	0	0	3
CS	421L	Introduction to Computer Applications Lab	0	0	4	2
		Semester Total:	**23**	**0**	**4**	**25**

Second Year

Semester-III

Course	Code	Course Name	L	T	P	C*
HIND	503	हिन्दी नाटक	5	0	0	5
HIND	515	हिन्दी आलोचना	5	0	0	5
HIND	508	पाश्चात्य साहित्यालोचन	5	0	0	5
HIND	502	छायावादोत्तर कविता	5	0	0	5
		विषयाधारित चयनित पाठ्यक्रम-I	5	0	0	5
		स्वाध्यायाधारित चयनित पाठ्यक्रम-I	0	0	4	2
		Semester Total:	**25**	**0**	**4**	**27**

Semester-IV

Course	Code	Course Name	L	T	P	C*
HIND	513	कथेतर गद्य विधाएँ	5	0	0	5
HIND	514	हिन्दी उपन्यास	5	0	0	5
HIND	509	पत्रकारिता	5	0	0	5
HIND	507P	परियोजना	0	0	10	5
		चयनित पाठ्यक्रम	5	0	0	5
		स्वाध्यायाधारित चयनित पाठ्यक्रम–II	0	0	4	2
		Semester Total:	**20**	**0**	**14**	**27**

विषयाधारित चयनित पाठ्यक्रम समूह

Course	Code	Course Name	L	T	P	C*
HIND	516	प्रवासी साहित्य	5	0	0	5
HIND	510	विशिष्ट रचनाकार : प्रेमचन्द	5	0	0	5
HIND	512	विशिष्ट रचनाकार : सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	5	0	0	5
HIND	511	विशिष्ट रचनाकार : सूरदास	5	0	0	5
HIND	501	भारतीय साहित्य	5	0	0	5
HIND	521	विशिष्ट रचनाकार : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल	5	0	0	5

स्वाध्यायाधारित चयनित पाठ्यक्रम समूह

Course	Code	Course Name	L	T	P	C*
HIND	517R	साहित्य और सिनेमा	0	0	4	2
HIND	518R	साहित्य और भारतीय संस्कृति	0	0	4	2
HIND	519R	आत्मकथा, जीवनी और डायरी	0	0	4	2
HIND	520R	अनूदित साहित्य	0	0	4	2
HIND	522R	समकालीन हिन्दी कविता	0	0	4	2

*** L - Lecture hrs/week; T - Tutorial hrs/week; P-Project/Practical/Lab/All other non-classroom academic activities, etc. hrs/week; C - Credit Points of the Course**

Student can opt open (Generic) elective from any discipline of the Vidyapith with prior permission of respective heads and time table permitting.

Every Student shall also opt for:
Five Fold Education: Physical Education I, Physical Education II, Five Fold Education: Aesthetic Education I, Aesthetic Education II, Five Fold Education: Practical Education I, Practical Education II one each semester

Five Fold Activities

Aesthetic Education I/II		Physical Education I/II	
BVFF 101	Classical Dance (Bharatnatyam)	BVFF 201	Aerobics
BVFF 102	Classical Dance (Kathak)	BVFF 202	Archery
BVFF 103	Classical Dance (Manipuri)	BVFF 203	Athletics
BVFF 104	Creative Art	BVFF 204	Badminton
BVFF 105	Folk Dance	BVFF 205	Basketball
BVFF 106	Music-Instrumental (Guitar)	BVFF 206	Cricket
BVFF 107	Music-Instrumental (Orchestra)	BVFF 207	Equestrian
BVFF 108	Music-Instrumental (Sarod)	BVFF 208	Flying - Flight Radio Telephone Operator's Licence (Restricted)
BVFF 109	Music-Instrumental (Sitar)	BVFF 209	Flying - Student Pilot's Licence
BVFF 110	Music-Instrumental (Tabla)	BVFF 229	Aeromodelling
BVFF 111	Music-Instrumental (Violin)	BVFF 210	Football
BVFF 112	Music-Vocal	BVFF 211	Gymnastics
BVFF 113	Theatre	BVFF 212	Handball
Practical Education I/II		BVFF 213	Hockey
BVFF 301	Banasthali Sewa Dal	BVFF 214	Judo
BVFF 302	Extension Programs for Women Empowerment	BVFF 215	Kabaddi
BVFF 303	FM Radio	BVFF 216	Karate - Do
BVFF 304	Informal Education	BVFF 217	Kho-Kho
BVFF 305	National Service Scheme	BVFF 218	Net Ball
BVFF 306	National Cadet Corps	BVFF 219	Rope Mallakhamb
		BVFF 220	Shooting
		BVFF 221	Soft Ball
		BVFF 222	Swimming
		BVFF 223	Table Tennis
		BVFF 224	Tennis
		BVFF 225	Throwball
		BVFF 226	Volleyball
		BVFF 227	Weight Training
		BVFF 228	Yoga

Every Student shall also opt for:
Five Fold Education: Physical Education I, Physical Education II,
Five Fold Education: Aesthetic Education I, Aesthetic Education II,
Five Fold Education: Practical Education I, Practical Education II
one each semester

Evaluation Scheme and Grading System

Continuous Assessment (CA) (Max. Marks)					End-Semester Assessment (ESA) (Max. Marks)	Grand Total (Max. Marks)
Assignment		Periodical Test		Total (CA)		
I	II	I	II			
10	10	10	10	40	60	100

In all theory, laboratory and other non classroom activities (project, dissertation, seminar, etc.), the Continuous and End-semester assessment will be of 40 and 60 marks respectively. However, for Reading Elective, only End semester exam of 100 marks will be held. Wherever desired, the detailed breakup of continuous assessment marks (40), for project, practical, dissertation, seminar, etc shall be announced by respective departments in respective student handouts.

Based on the cumulative performance in the continuous and end-semester assessments, the grade obtained by the student in each course shall be awarded. The classification of grades is as under:

Letter Grade	Grade Point	Narration
O	10	Outstanding
A+	9	Excellent
A	8	Very Good
B+	7	Good
B	6	Above Average
C+	5	Average
C	4	Below Average
D	3	Marginal
E	2	Exposed
NC	0	Not Cleared

Based on the obtained grades, the Semester Grade Point Average shall be computed as under:

$$SGPA = \frac{CC_1 * GP_1 + CC_2 * GP_2 + CC_3 * GP_3 + ---- + CC_n * GP_n}{CC_1 + CC_2 + CC_3 + ---- + CC_n} = \frac{\sum_{i=1}^{n} CC_i * GP_i}{\sum_{i=1}^{n} CC_i}$$

Where n is the number of courses (with letter grading) registered in the semester, CC_i are the course credits attached to the i^{th} course with letter grading and GP_i is the letter grade point obtained in the i^{th} course. The courses which are given Non-Letter Grades are not considered in the calculation of SGPA.

The Cumulative Grade Point Average (CGPA) at the end of each semester shall be computed as under:

$$CGPA = \frac{CC_1 * GP_1 + CC_2 * GP_2 + CC_3 * GP_3 + ----+ CC_n * GP_n}{CC_1 + CC_2 + CC_3 + ----+ CC_n} = \frac{\sum_{i=1}^{n} CC_i * GP_i}{\sum_{i=1}^{n} CC_i}$$

Where n is the number of all the courses (with letter grading) that a student has taken up to the previous semester.

Student shall be required to maintain a minimum of 4.00 CGPA at the end of each semester. If a student's CGPA remains below 4.00 in two consecutive semesters, then the student will be placed under probation and the case will be referred to Academic Performance Review Committee (APRC) which will decide the course load of the student for successive semester till the student comes out of the probationary clause.

To clear a course of a degree program, a student should obtain letter grade C and above. However, D/E grade in two/one of the courses throughout the UG/PG degree program respectively shall be deemed to have cleared the respective course(s). The excess of two/one D/E course(s) in UG/PG degree program shall become the backlog course(s) and the student will be required to repeat and clear them in successive semester(s) by obtaining grade C or above.

After successfully clearing all the courses of the degree program, the student shall be awarded division as per following table.

Division	CGPA
Distinction	7.50 and above
First Division	6.00 to 7.49
Second Division	5.00 to 5.99
Pass	4.00 to 4.99

CGPA to % Conversion Formula: % of Marks Obtained = CGPA * 10

प्रथम समसत्र

HIND 407 कथा साहित्य

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम –

- उपन्यास कला तथा कहानी कला के मूलभूत अंतर को समझने में समर्थ हो सकेंगी।
- साहित्य एवं समाज के अंतर्संबंध को समझने की क्षमता विकसित कर सकेंगी।
- उपन्यास एवं कहानी के पठन – पाठन, मूल्यांकन एवं विश्लेषण की आलोचनात्मक दृष्टि विकसित कर सकेंगी।
- हिन्दी कथा – साहित्य की विविध प्रवृत्तियों को समझ सकेंगी

खण्ड–1

क. गोदान– प्रेमचन्द, सरस्वती प्रेस, बनारस, 1961

ख. मैला आंचल – फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल पेपरबैक्स, दिल्ली 2009

खण्ड–2

झूठा–सच (प्रथम खण्ड) – यशपाल,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1996

(व्याख्या के लिये केवल प्रथम खण्ड)

झूठा–सच (द्वितीय खण्ड) – यशपाल

खण्ड–3

क. त्यागपत्र – जैनेन्द्र, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली ,1987

ख. हिन्दी कहानियाँ– चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, यशपाल, अज्ञेय, अमरकान्त, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा (उसने कहा था, पूस की रात, पाजेब, परदा, रोज, जिन्दगी और जोंक, सिक्का बदल गया, यही सच है, वापसी)

सहायक पुस्तकें –

1. श्रीवास्तव, डॉ. शिवनारायण, (1951) *हिन्दी उपन्यास,* सरस्वती मन्दिर प्रकाशन
2. सिंह, डॉ. कुँवरपाल, (1976) *हिन्दी उपन्यास सामाजिक चेतना,* नई दिल्ली, पाण्डुलिपि प्रकाशन

3. सिंह, डॉ. कुँवरपाल, (1980) *प्रेमचन्द और जनवादी साहित्य की परम्परा,* दिल्ली, भाषा प्रकाशन

4. सिंह, डॉ. त्रिभुवन, (1961) *हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद,* वाराणसी, हिन्दी प्रचारक

5. शर्मा, डॉ. रामविलास, (1981) *प्रेमचन्द और उनका युग,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

6. मदान, (सं.) डॉ. इन्द्रनाथ, (1967)*प्रेमचन्द प्रतिभा,* इलाहाबाद, सरस्वती प्रेस

7. मदान, डॉ. इन्द्रनाथ, (1975) *हिन्दी उपन्यास : पहचान और परख,* दिल्ली, लिपि प्रकाशन

8. सिंहल, डॉ. शशि भूषण, (1976) *हिन्दी उपन्यास : बदलते सन्दर्भ,* नई दिल्ली, प्रवीण प्रकाशन

9. फाक्स, रॉल्फ, (1957) *उपन्यास और लोक जीवन,* नई दिल्ली, पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस

10. मदान, डॉ. इन्द्रनाथ, (1953) *आज की कहानी,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

11. सिंह, डॉ. नामवर, (1966) *कहानी : नयी कहानी,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

12. कमलेश्वर, (1966) *नयी कहानी की भूमिका,* दिल्ली, अक्षर प्रकाशन

13. श्रीवास्तव, डॉ. परमानन्द, (1965) *हिन्दी कहानी की रचना प्रक्रिया,* कानपुर, ग्रन्थम प्रकाशन

14. यादव, राजेन्द्र, (1993) *एक दुनिया समानान्तर,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण पब्लिकेशन,

15. अवस्थी, डॉ. देवीशंकर, (1973) *नयी कहानी : सन्दर्भ और प्रकृति,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

16. मोहन, नरेन्द्र, (1973) *समकालीन कहानी की पहचान,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन

17. श्रीवास्तव, गरिमा, (1999) *हिन्दी उपन्यासों में बौद्धिक विमर्श,* नई दिल्ली, संजय प्रकाशन,

18. श्रीवास्तव, परमानन्द, (1995) *उपन्यास का पुनर्जन्म,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन

19. श्रीवास्तव, मीनाक्षी, (1998) *प्रेमचन्द के उपन्यास : कथा संरचना,* जयपुर, देवनागर प्रकाशन

20. गुप्त, डॉ. रामदीन, (1961) *प्रेमचन्द और गाँधीवाद,* दिल्ली, हिन्दी साहित्य संसार

21. सिंह, डॉ. कुँवरपाल, (1984) *यशपाल समग्र मूल्यांकन,* दिल्ली, पराग प्रकाशन

22. सिंह, डॉ. कुँवरपाल, (2005) *डॉ. राही मासूम रजा, कानपुर,* चिंतन प्रकाशन

23. सिंह, डॉ. कुँवरपाल, (1953) *मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र और हिन्दी उपन्यास,* दिल्ली, आत्माराम प्रकाशन

ई सामग्री स्त्रोत :

http://egyankosh.ac.in/

https://epgp.inflibnet.ac.in/

HIND 403 भक्तिकालीन काव्य

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम –

- हिन्दी साहित्य के सर्वाधिक समृद्ध कालखण्ड भक्तिकाल के उदय की परिस्थितियों एवं उसके विस्तार का अभिज्ञान हो सकेगा।
- मध्ययुग में विभिन्न सगुण, निर्गुण धारा के विभिन्न सम्प्रदायों की उपासना पद्धतियों एवं उनके साहित्य का अभिज्ञान हो सकेगा।
- युगीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में साहित्यिक लोकजागरण से परिचित हो सकेंगी।
- महाकाव्यों एवं खण्डकाव्यों के अध्ययन से काव्य विषयों, काव्य शैलियों के मूल्यांकन में सक्षम हो सकेंगी।
- ब्रज एवं अवधी की साहित्यिक रचनाओं के परिचय से हिन्दी भाषा की विकास परम्परा का अभिज्ञान हो सकेगा।

खण्ड – 1

कबीर ग्रंथावली – सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2002

(पद संख्या : 1, 5, 8, 11, 12, 27, 36, 38, 43, 49, 50, 68, 84, 99, 104) (15 पद)

खण्ड– 2

पद्मावत – सं. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 2002

(मानसरोदक खण्ड, नागमती सुआ संवाद खण्ड, नागमती वियोग खण्ड, उपसंहार)

खण्ड – 3

(1) भ्रमरगीत सार–स. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, 1963 संस्करण, काशी, नागरी प्रचारिणी सभा

(पद सं. – 4, 7, 18, 22, 23, 28, 30, 34, 41, 42, 57, 58, 60, 61, 69, 70, 76, 78, 82, 121) (20 पद)

(2) रामचरित मानस– तुलसीदास, गीता प्रेस, गोरखपुर, 1923

(अयोध्याकाण्ड राम वनगमन प्रसंग)

सहायक पुस्तकें –

1. स्नातक, डॉ. विजयेन्द्र, (1999), *कबीर,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन
2. चतुर्वेदी, आचार्य परशुराम, (1970), *कबीर साहित्य चिंतन,* इलाहाबाद, स्मृति प्रकाशन
3. त्रिगुणायत, डॉ. गोविन्द, (1961), *हिन्दी की निर्गुण काव्यधारा और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि,* कानपुर, साहित्य प्रकाशन
4. चतुर्वेदी, आचार्य परशुराम, (1962), *भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन
5. तिवारी, रामपूजन, (1960), *हिन्दी सूफीकाव्य की भूमिका,* पटना, ग्रन्थ वितना
6. तिवारी, डॉ. नित्यानन्द, (1987), *मध्ययुगीन रोमांचक आख्यान,* दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस
7. सिंह, डॉ. कुँवरपाल, (1995), *भक्ति आन्दोलन : इतिहास और संस्कृति,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
8. सिंह, डॉ. कुँवरपाल, (2002), *भक्ति आन्दोलन और लोक संस्कृति,* दिल्ली, अनंग प्रकाशन
9. शर्मा, डॉ. हरवंशलाल, (2015), *सूर और उनका साहित्य,* अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर
10. सिंह, डॉ. विजय बहादुर, *सूर के पद और रचना दृष्टि,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन

11. डॉ. प्रेमशंकर, (1979), भक्ति काव्य की सामाजिक सांस्कृतिक चेतना, मैक मिलन प्रकाशन
12. शुक्ल, रामचन्द्र, (2012), *सूरदास,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
13. वर्मा, ब्रजेश्वर, (1994), *सूरदास,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन
14. श्रीवास्तव, स्नेहलता, (1972), *भ्रमरगीत काव्य और उसकी परम्परा,* अलीगढ़, भारत प्रकाशन
15. शुक्ल, रामचन्द्र, (2004), *गोस्वामी तुलसीदास,* जयपुर, अनु प्रकाशन
16. सिंह, उदय भानु, (2002), *तुलसी काव्य मीमांसा,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन
17. सिंह, उदय भानु, (2002), *तुलसी दर्शन मीमांसा,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन
18. मेघ, डॉ. रमेश कुन्तल, (1967), *तुलसी आधुनिक वातायन से,* कलकत्ता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

ई सामग्री स्त्रोत :

https://epgp.inflibnet.ac.in/
http://egyankosh.ac.in/

HIND 410 हिन्दी भाषा एवं लिपि

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम

- हिन्दी भाषा के साहित्यिक विकास से परिचय प्राप्त कर सकेंगी ।
- हिन्दी लेखन एवं उच्चारण में क्षेत्रीय प्रभावों के ज्ञान से लेखन में सुधार कर सकेंगी ।
- आधुनिक भारत के निर्माण में भाषा की भूमिका से छात्राओं का परिचय हो पाएगा।
- देवनागरी के व्याकरणिक एवं लिपिबद्ध ज्ञान से हिन्दी लेखन एवं भाषिक संरचना में एकरूपता आ पाएगी।
- भाषा और लिपि के ज्ञान से छात्राओं की संप्रेषणीयता का विकास हो पाएगा।

खण्ड–1

क. हिन्दी क्षेत्र और उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि (प्राचीन जनपदों की अवधारणा के संदर्भ में)

ख. हिन्दी की बोलियों का परिचय (नामकरण, क्षेत्र, साहित्य, प्रमुख विशेषताएँ)

ग. मध्यकाल में अवधी और ब्रजभाषा का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास

घ. उन्नीसवीं सदी के अंतर्गत खड़ी बोली का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास

ड. स्वाधीनता संघर्ष के दौरान हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रूप में विकास

च. आधुनिक संदर्भ में हिन्दी

खण्ड–2

क. भाषा और लिपि का परस्पर संबंध, लिपि–विज्ञान का उद्‌भव और विकास

ख. देवनागरी लिपि : उद्‌भव, विकास और विशेषताएँ

खण्ड–3

क. हिन्दी भाषा का मानकीकरण

ख. मानक हिन्दी की व्याकरणिक विशेषताएँ

ग. संप्रेषण सिद्धान्त और भाषा की संप्रेषणीयता

सहायक पुस्तकें –

1. तिवारी, डॉ. भोलानाथ, (2018), *हिन्दी भाषा,* इलाहाबाद, किताब महल
2. तिवारी, डॉ. उदय नारायण, (1967), *हिन्दी भाषा का उद्‌भव और विकास,* इलाहाबाद, भारती भण्डार
3. वर्मा, डॉ. धीरेन्द्र, (1973), *हिन्दी भाषा का इतिहास,* प्रयाग, हिन्दुस्तानी एकेडमी
4. तिवारी, डॉ. भोलानाथ, (1977*), हिन्दी भाषा और नागरी लिपि,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन
5. तिवारी, भोलानाथ, *हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास,* दिल्ली, ज्ञान भारती
6. बाहरी, हरदेव, (1989),*शुद्ध हिन्दी,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन
7. शर्मा, आचार्य देवेन्द्र नाथ, (1966*), देवनागरी लिपि,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन
8. वर्मा, धीरेन्द्र, (1973),*हिन्दी भाषा का इतिहास,* प्रयाग, हिन्दुस्तानी एकेडमी
9. वर्मा, धीरेन्द्र, (1954),*ब्रजभाषा,* इलाहाबाद, हिन्दुस्तानी एकेडमी
10. बाहरी, हरदेव, (1989),*हिन्दी भाषा,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

11. सुमन, अम्बाप्रसाद, (1966), *हिन्दी और उसकी उपभाषाओं का स्वरूप,* प्रयाग, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रकाशन
12. वर्मा, शिवराज, (1970), *राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का विकास और समस्याएँ,* दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स
13. ब्रजमोहन, (1993), *मानक हिन्दी,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
14. वर्मा, देवेन्द्रनाथ, *मानक हिन्दी की व्याकरणिक विशेषताएँ,* दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन
15. वर्मा, मोतीलाल, भाटिया, कैलाशचन्द्र, (2004), *हिन्दी भाषा,* इलाहाबाद, साहित्य भवन प्रकाशन
16. गुरू, कामताप्रसाद, (2012), *हिन्दी व्याकरण,* जयपुर, पापुलर बुक
17. सक्सेना, बाबू राम, (1971), *अवधी का विकास,* मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स
18. बाहरी, हरदेव, (2013), *हिन्दी भाषा : उद्‌भव, विकास और स्वरूप,* इलाहाबाद, किताब महल
19. भाटिया, कैलाशचन्द्र, (1990), *राजभाषा हिन्दी,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
20. सिंह, सूरजभान, (1991), *हिन्दी भाषा – सन्दर्भ संरचना,* दिल्ली, साहित्य सहकार
21. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ, (2002), *भाषायी अस्मिता और हिन्दी,* दिल्ली, उत्तम प्रकाशन
22. किशोर, गिरिराज, (1988), *भाषा और प्रौद्योगिकी, कानपुर,* स्थनात्मक लेखन एवं प्रकाशन केन्द्र

ई सामग्री स्त्रोत :
http://egyankosh.ac.in/

HIND 404 भारतीय काव्यशास्त्र

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम –

- हिन्दी काव्यशास्त्र के सैद्धांतिक आधारों तथा स्थापनाओं से परिचित हो सकेंगी।
- विभिन्न काव्यशास्त्रियों के सैद्धांतिक दृष्टिकोणों का अभिज्ञान कर सकेंगी।

- काव्य सृजन की प्रक्रियाओं के निरूपण के पश्चात् उनमें लेखन के मूलभूत तत्वों का अभिज्ञान हो सकेगा।
- काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों के अवलोकन में आधुनिक रचनाओं के मूल्यांकन में सक्षम हो सकेंगी।
- नवीन आलोचना पद्धतियों को प्राचीन समीक्षा सिद्धांतों के आलोक में अन्वेषण एवं विवेचन की क्षमता उत्पन्न हो सकेगी।

खण्ड – 1

(क) काव्य लक्षण

(ख) काव्य हेतु

(ग) काव्य प्रयोजन

खण्ड –2

(क) (1) रस सिद्धान्त – रस का स्वरूप

(2) रस की परिभाषा, रस के अंग, प्रकार

(ख) (1) रस निष्पत्ति

(2) साधारणीकरण

(ग) (1) अलंकार सिद्धान्त – स्थापनाएँ और मूल्यांकन, अलंकारों का वर्गीकरण

(2) रीति सिद्धान्त – स्थापनाएँ और मूल्यांकन, वामन का गुण विवेचन और उसकी समीक्षा, गुण–रीति सम्बन्ध, रीति भेद।

खण्ड–3

ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि की स्थापना (आनन्दवर्धन के अनुसार) ध्वनि का महत्व, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, उत्तम काव्य, गुणीभूत व्यंग्य (मध्यम काव्य) के प्रमुख भेद, चित्रकाव्य (अधम काव्य)

सहायक पुस्तकें –

1. उपाध्याय, बलदेव, (1963) *भारतीय साहित्यशास्त्र,* वाराणसी, नन्दकिशोर प्रकाशन
2. सिंह, उदयभानु, भारद्वाज, जगदीश, (1975), *भारतीय काव्यशास्त्र* दिल्ली, सामयिक प्रकाशन
3. त्रिपाठी, राममूर्ति, (2008), *काव्य तत्व विमर्श,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
4. चौधरी, सत्यदेव, (1956), *भारतीय काव्य शास्त्र,* इलाहाबाद, साहित्य भवन प्रकाशन

5. नगेन्द्र, (2002*), रस सिद्धान्त,* नई दिल्ली, नेशनल पब्लिकेशन हाउस
6. नगेन्द्र, *भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका,* नई दिल्ली, ओरियण्टल बुक डिपो
7. मिश्र, भागीरथ, (1970), *काव्यशास्त्र,* वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन
8. जैन, निर्मला, (1990), *रस सिद्धान्त और सौन्दर्यशास्त्र,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
9. शुक्ल, रामचन्द्र, (1950), *रस मीमांसा,* काशी, काशी नागरी प्रचारिणी सभा
10. त्रिगुणायत, गोविन्द, (1975) *भारतीय काव्यशास्त्र,* दिल्ली, सामयिक प्रकाशन
11. उपाध्याय, डॉ. विश्वम्भर नाथ, (1983), *भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन,* जयपुर, अनुपम प्रकाशन
12. चन्द्रगुप्त, डॉ. गणपति, (1989), *भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन
13. सिंह, डॉ. बच्चन, (1992), *आलोचक और आलोचना,* नई दिल्ली, नेशनल पब्लिकेशन

ई सामग्री स्त्रोत :

https://epgp.inflibnet.ac.in/

http://egyankosh.ac.in/

HIND 402 आदिकालीन काव्य

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम –

- हिन्दी काव्य के उद्भव के कारकों एवं परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगी।
- प्राचीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों, काव्य धाराओं के आलोचनात्मक विवेचन में सक्षम हो सकेंगी।
- पाठ्यक्रम में चयनित रचनाओं के व्याख्यात्मक विश्लेषण से साहित्य की तद्युगीन विवेचना की समझ विकसित हो सकेगी।
- अपभ्रंश के प्राचीन व्याकरणिक रूपों, काव्य शैलियों एवं काव्यगत अवधारणाओं से परिचित हो सकेंगी।
- सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य एवं रासो साहित्य की प्रमुख रचनाओं का अभिज्ञान हो सकेगा।

खण्ड –1 (क) अद्दमाण (अब्दुल रहमान) – संदेशरासक,–: सं. हजारीप्रसाद द्विवेदी एवं विश्वनाथ त्रिपाठी ,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1975

(तृतीय प्रक्रम, ऋतु वर्णन –हेमन्त, शिशिर, बसन्त)

(ख) नरपति नाल्ह – बीसलदेव रासो, सं. माता प्रसाद गुप्त, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

(चतुर्थ सर्ग)

खण्ड–2 (क) अमीर खुसरो : व्यक्तित्व और कृतित्व – डॉ. परमानन्द पांचाल, हिन्दी बुक सेंटर, दिल्ली–2001

(कव्वाली 1 , गीत 4–2 , दोहे, 1, 2, 5, 9, 13 पहेलियाँ –1, 4, 5, 12, 17, 30, 32, 34, 54, 60, 68, 71, 80 मुकरियाँ – 1, 3, 5, 12, 26)

(ख) विद्यापति पदावली – सं. रामवृक्ष बेनीपुरी , पुस्तक भंडार, पटना, 2003

(वन्दना – 1,2,3, बसन्त – 174, 175, 176, 179, 180, 184, विरह – 187, 188, 191, 192, 195, 200, 202, 205)

खण्ड–3 (क) आदिकाल : सिंहावलोकन

(ख) रासो एवं रासक काव्य परम्परा

(ग) नाथ साहित्य : सिद्ध साहित्य, जैन साहित्य, लौकिक साहित्य

सहायक पुस्तकें –

1. सिंह, नामवर, (2000), *हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योगदान,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
2. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, (2012), *हिन्दी साहित्य का आदिकाल,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
3. तोमर, रामसिंह, (1964), *प्राकृत अपभ्रंश साहित्य और उसका हिन्दी साहित्य पर प्रभाव,* हिन्दी परिषद् प्रकाशन
4. सिंह, शिवप्रसाद, (2000), *विद्यापति,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन
5. दीक्षित, ए पी, (1971), *विद्यापति,* ग्वालियर, साहित्य प्रकाशन
6. सांकृत्यायन, राहुल, *हिन्दी काव्यधारा,* इलाहाबाद, किताब महल
7. डॉ. धर्मवीर, (1968), *सिद्ध साहित्य,* इलाहाबाद, किताब महल
8. वर्मा, रामकुमार, (1971), *हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास,* रामनारायणलाल बेनीमाधव

9. बोरा, राजमल, (1974), *पृथ्वीराज रासो : इतिहास और काव्य,* नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस

10. डॉ नगेन्द्र, (1981), *हिन्दी साहित्य का इतिहास, नई दिल्ली,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस

11. शुक्ल डॉ. रामचन्द्र, (2002), *हिन्दी साहित्य का इतिहास,* दिल्ली, प्रकाशन संस्थान

12. सिंह, डॉ. बच्चन, (2000), *हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास,* दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन

ई सामग्री स्त्रोत :

https://epgp.inflibnet.ac.in/ ,

http://egyankosh.ac.in/

द्वितीय समसत्र

HIND 408 रीतिकालीन काव्य

	L	T	P	C
Max. Marks : 100				
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम –

- हिन्दी साहित्य के मध्यकाल की व्यापक समझ विकसित कर सकेंगी।
- इतिहास के विभिन्न काल–खण्डों के दौरान साहित्य में होने वाले परिवर्तनों का विश्लेषण करने में समर्थ हो सकेंगी।
- समयानुसार परिवर्तित साहित्यिक जनरूचि को समझने में समर्थ हो सकेंगी।
- ब्रजभाषा एवं काव्य –शैली के सौंदर्य को समझ सकेंगी।
- कवि हृदय की मार्मिकता एवं उनकी मनोस्थितियों को समझ सकेंगी।

खण्ड – 1

बिहारी रत्नाकर – संपादक जगन्नाथ दास रत्नाकर, गंगा ग्रन्थकार, वाराणसी, 1969

(दोहा सं. – 1, 5, 7, 9, 10, 13, 15, 21, 22, 28, 32, 46, 50, 51, 55, 65, 69, 71, 73, 78, 85, 94, 95, 99, 106, 109, 120, 124, 126, 191, 192, 201, 203, 207, 219, 221, 222, 227, 238, 251, 280, 295, 300, 303, 335, 347, 420, 425, 472, 479) (पचास दोहे)

खण्ड – 2

(क) केशवदास – केशव – सुधा सं. डॉ. विजयपाल सिंह, नागरी प्रचारिणी सभा, 1951

(रामचन्द्रिका के आरम्भ के तीस छन्द)

(ख) घनानंद कवित्त –सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, रीगल बुक डिपो, दिल्ली, 2002

(घनानंद कवित्त (प्रथम शतक) के आरंभिक 30 कवित्त)

खण्ड – 3

(क) भूषण ग्रंथावली – सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1959

(छन्द संख्या – 50, 57, 59, 67, 98, 118, 135, 163, 210, 242, 327, 409, 411, 415, 424, 428, 429, 440, 443, 451)

(ख) देवसुधा : सं. मिश्र बन्धु, गंगा पुस्तक माला, लखनऊ, 1973

(वंदना – 1, 2, 3, पावस – 63, 68, 69, बसन्त – 72, 73, 74, राग – रागिनी– 85, 86, 87)

सहायक पुस्तकें –

1. ओम प्रकाश, (1978), *बिहारी,* दिल्ली, राजपाल एण्ड संस
2. सिंह, डॉ. बच्चन, (2008), *बिहारी का नया मूल्यांकन,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन
3. त्रिपाठी, डॉ. रामसागर, *बिहारी मीमांसा,* नई दिल्ली, अशोक प्रकाशन
4. डॉ. रमाशंकर, (1970), *बिहारी का काव्य लालित्य,* प्रथम संस्करण
5. डॉ. नगेन्द्र, (1953), *रीति काव्य की भूमिका,* दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस
6. मिश्र, डॉ. भगीरथ, (1973*), हिन्दी रीति साहित्य,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
7. गुप्त, जगदीश, (1983), *रीति काव्य संग्रह,* कानपुर, ग्रन्थम प्रकाशन
8. गौड़, मनोहर लाल, (1959), *घनानंद और स्वच्छन्द काव्यधारा,* काशी, नागरी प्रचारिणी सभा

ई सामग्री स्त्रोत :

http://egyankosh.ac.in/

https://epgp.inflibnet.ac.in/

HIND 405 भाषा विज्ञान

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम

- छात्राओं का भाषिक कौशल व समझ विकसित हो सकेगी।
- भाषा वैज्ञानिक सिद्धांतों व मान्यताओं को समझ सकेंगी।
- भाषा व समाज के सम्बन्ध में दृष्टि विकसित कर सकेंगी।
- संसार की अन्यान्य भाषाओं की प्रकृति व संरचना से परिचित होंगी।
- शोध के लिए भाषा विज्ञान जैसे नए विषयों के चयन में समर्थ हो सकेंगी।

खण्ड – 1 भाषा एवं भाषा विज्ञान

क. भाषा की परिभाषा तथा विशेषताएँ

ख. भाषा एवं बोली में अंतर

ग. संसार की भाषाओं का पारिवारिक वर्गीकरण

घ. भाषा विज्ञान : परिभाषा, क्षेत्र एवं विशेषताएँ

ङ. भाषा विज्ञान के अध्ययन की दिशाएँ (वर्णनात्मक, एतिहासिक, तुलनात्मक, संरचनात्मक एवं प्रायोगिक)

च. भाषा विज्ञान का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध

खण्ड – 2 ध्वनि विज्ञान एवं रूप विज्ञान

क. ध्वनि विज्ञान की शाखाएँ

ख. ध्वनि यंत्र की संरचना व कार्य

ग. हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण

घ. ध्वनि परिवर्तन के कारण और दिशाएँ

ङ. स्वनिम की अवधारणा व भेद

च. रूपिम अवधारणा व भेद

छ. सम्बन्ध तत्व एवं अर्थ तत्व का सम्बन्ध

ज. सम्बन्ध तत्व के प्रकार

खण्ड – 3 वाक्य विज्ञान एवं अर्थ विज्ञान

क. वाक्य : स्वरूप व अवधारणा

ख. अभिहितान्वयवाद और अन्विताभिधानवाद

ग. वाक्य के तत्व एवं भेद

घ. अर्थ की अवधारणा एवं शब्द अर्थ का सम्बन्ध

ङ. अर्थ बोध की प्रक्रिया व साधन

च. पर्यायता, विलोमता, अनेकार्थता

छ. अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण

सहायक पुस्तकें :

1. शर्मा, देवेन्द्र नाथ, (2001), *भाषा विज्ञान की भूमिका,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण
2. तिवारी, भोलनाथ, (1985), *भाषा विज्ञान,* नई दिल्ली, लिपि प्रकाशन
3. तिवारी, उदयनारायण, (1964), *भाषा शास्त्र की रूपरेखा,* इलाहाबाद, भारती भण्डार
4. फील्ड, लैनर्ड ब्लूम, (1968) *भाषा (हिन्दी अनुवाद,* अनुवादक विश्वनाथ, दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास
5. श्रीवास्तव, डॉ. रवीन्द्रनाथ, (2000), *अनुप्रयुक्त भाषा विभाग : सिद्धान्त और प्रयोग,* दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन,
6. अग्रवाल, डॉ. कुसुम, *भाषा शिल्प,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
7. द्विवेदी, डॉ. कपिलदेव, (2002), *भाषा विज्ञान और भाषा शास्त्र,* वाराणसी, वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन
8. सिंह, कर्ण, (1994), *भाषा विज्ञान,* मेरठ, साहित्य भण्डार

ई सामग्री स्त्रोत :

https://epgp.inflibnet.ac.in/

http://egyankosh.ac.in/

HIND 411 आधुनिक कविता

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम –

- आधुनिक कविता के अध्ययन से भारतीय काव्यधारा की संपूर्ण विवेचना में सक्षम हो सकेंगी।
- छायावादी काव्य में स्थापित नवीन भावबोध एवं नई काव्यशैलियों से परिचित हो सकेंगी।

- हिन्दी काव्यधारा में युगीन परिस्थितियों यथा राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक कारणों के विश्लेषण क्षमता की वृद्धि हो सकेगी।
- राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में साहित्य की भूमिका को सूक्ष्म रूप से विवेचित करने के दृष्टिकोण को विकसित कर सकेंगी।
- भारतीय दर्शन और चिंतन की वर्तमान संदर्भों में प्रासंगिकता को समझ सकेंगी।
- अध्यापकीय एवं प्रशासकीय सेवा की तैयारियों के लिए ज्ञान अर्जित कर सकेंगी।

खण्ड–1 मैथिलीशरण गुप्त – साकेत, साहित्य सदन, चिरगाँव, 2008
(नवम सर्ग)

खण्ड–2 जयशंकर प्रसाद –कामायनी, हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली, 2004
(चिंता और श्रद्धा सर्ग)

खण्ड–3 (क) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' –(राग–विराग – डॉ. राम विलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, 2000
(राम की शक्ति पूजा, सरोज स्मृति, वह तोड़ती पत्थर)

(ख) सुमित्रानंदन पंत – आज के लोकप्रिय हिन्दी कवि – सुमित्रानंदन पंत – सं. डॉ. हरिवंशराय बच्चन, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 2008
(तेरा कैसा गान, फूलों का हास, ताज, ग्राम युवती, स्त्री, भारतगीत)

(ग) महादेवी वर्मा– परिक्रमा,साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1974
(धूप–सा तन, विरह का जलजात जीवन, रश्मियों की छाया में, दीप मेरे जल अकंपित, चुभते ही तेरा अरूण बाण)

सहायक पुस्तकें –

1. डॉ. नगेन्द्र, (1999), *साकेत : एक अध्ययन,* नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस
2. शर्मा, डॉ. रामविलास, (1977), *महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
3. श्रोत्रिय प्रभाकर, *अतीत के हंस मैथिलीशरण गुप्त,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
4. बाजपेयी, नन्द दुलारे, *जयशंकर प्रसाद,* (1997), रांची, भारतीय भण्डार

5. डॉ. नगेन्द्र (1987), *कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ,* नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस

6. मुक्तिबोध, गजानन माधव, (1991), *कामायनी : एक पुनर्विचार,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

7. बाली, डॉ. तारकनाथ, *छायावाद और कामायनी,* नई दिल्ली, सार्थक प्रकाशन

8. सहल, कन्हैयालाल, (1955), *कामायनी दर्शन,* दिल्ली, आत्माराम एण्ड सन्स

9. शर्मा, राम विलास, (1969), *निराला की साहित्य साधना,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

10. सिंह, बच्चन, (1961), *क्रांतिकारी कवि निराला,* वाराणसी, नन्द किशोर प्रकाशन

11. पाण्डेय, गंगा प्रसाद, (2018), *महाप्राण निराला,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

12. शर्मा, रामविलास, (1991), *निराला,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन

13. सिंह, डॉ. राधिका, (1979), *महादेवी के काव्य में लालित्य योजना,* नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस

14. मदान, इन्द्रनाथ, (2009*), महादेवी,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन

15. सिंह, नामवर, (2006), *छायावाद,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

16. पाण्डेय, गंगा प्रसाद, (2001), *छायावाद के आधार स्तम्भ,* जयपुर, राजस्थान प्रकाशन

17. डॉ. प्रेमशंकर, *हिन्दी स्वच्छंदतावादी काव्य,* भोपाल, मध्यप्रदेश ग्रन्थ अकादमी

18. डॉ. देवराज, (1975), *छायावाद उत्थान और पतन,* लखनऊ, कल्पकार प्रकाशन

19. सिंह, दूधनाथ, (1993), *निराला – आत्महन्ता आस्था,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन

20. नवल, नंदकिशोर, (2000), *चार लम्बी कविताओं का रचना विधान,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन

ई सामग्री स्रोत :

https://epgp.inflibnet.ac.in/,

vle.du.ac.in,

http://egyankosh.ac.in/

HIND 409 शोध–प्रविधि

	L	T	P	C
Max. Marks : 100				
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम

- छात्राओं को शोध–विषयक सर्वांगीण जानकारी प्राप्त हो सकेगी एवं साथ ही आलोचनात्मक दृष्टि भी प्रखर हो सकेगी।
- शोध प्रविधि से साहित्य के अध्ययन की पद्धति से परिचित हो सकेंगी।
- तुलनात्मक दृष्टि विकसित हो सकेगी एवं साथ ही उनकी शोधपरक – दृष्टि भी विकसित हो सकेगी।
- बौद्धिक क्षमता विकसित हो सकेगी।
- विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी यह अत्यंत लाभदायक सिद्ध हो सकेगा।

खण्ड –1

शोध की वैज्ञानिक दृष्टि – शोध का स्वरूप, शोध के प्रकार, शोध और आलोचना।

शोध प्रक्रिया : विषय चयन, रूपरेखा निर्माण, सामग्री संकलन – चयन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण संदर्भ लेखन, उद्धरण, पाद टिप्पणी, अनुक्रमणिका तथा ग्रन्थ सूची, संभाव्य शोध कार्य की उपयोगिता।

खण्ड –2

शोधार्थी – निर्देशक : शोधार्थी के अपेक्षित गुण, निर्देशक के अपेक्षित गुण निर्देशक – शोधार्थी संबंध।

हिन्दी में शोध कार्य : हिन्दी में शोध का इतिहास, हिन्दी में शोध की विभिन्न पद्धतियाँ।

खण्ड – 3

साहित्यिक शोध की अनुसंगी विधाएँ : इतिहास, समाजशास्त्र, दर्शन, मनोविज्ञान, सौन्दर्य शास्त्र।

सहायक पुस्तकें–

1. सहगल, डॉ. मनमोहन, (1919), *हिन्दी शोध तंत्र की रूपरेखा*, जयपुर, पंचशील प्रकाशन
2. सिंहल, वैजनाथ, (1980), *शोध स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि*, दिल्ली, मैकमिलन

3. खण्डेलवाल, डॉ. अनुकुमार, रावत, डॉ. चन्द्रभान, *शोध प्रविधि और प्रक्रिया,* नई दिल्ली, के. के. पब्लिकेशन प्रकाशन

4. गुप्त, डॉ. माताप्रसाद, (1960), *अनुसंधान की प्रक्रिया,* दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस

5. खण्डेलवाल, डॉ. रामेश्वर, (1968), *शोध तंत्र और दृष्टि,* गुजरात, पटेल युनिवर्सिटी

CS 421 Introduction to Computer Applications

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**3**	**0**	**0**	**3**

Learning Outcomes:

On successful completion of the course students will be able to

- Demonstrate knowledge of the computer system.
- Have the ability to define operating system, databases and Network applications.
- Have an understanding of the proper contents of a computer system and these software tools like MS-WORD, MS-EXCELL, MS-Power Point and Corel draw.

Section A

Introduction to Computers

Elements of a Computer System, Block diagram of Computer System and functions of its components, evolution of computers and classification, concept of hardware and software.Introduction to Operating Systems (DOS, Windows and UNIX).

Section B

(a) PC Software

Word Processing: Creating and Saving documents, formatting, Inserting Tables and Pictures, and Mail Merge. Spread sheet: Creating worksheet, Use of functions and Creating Charts. Introduction to Presentation Packages, Graphics and Animation packages

(b) Introduction to Computing

Programming languages, system and application software, compiler and interpreters, concept of a program, program design & development, algorithms and flowchart development.

Section C

(a) Internet & Web

Introduction to popular packages on concept of computer communication, computer network (LAN, WAN, MAN), Internet, Internet Services-www, email etc.

(b) Introduction to Computer Applications in Humanities

Data Base Management Systems, Statistical Packages, Expert Systems, Multilingual Applications.

CS 421L Introduction to Computer Applications Lab

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**0**	**0**	**4**	**2**

1. Working with Windows.
2. Working with MS office Package (MS-Word, Excel, Power Point).
3. Working with CorelDraw
4. Using Internet services
5. Using subject specific application packages.

तृतीय समसत्र

HIND 503 हिन्दी नाटक

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम–

- छात्राओं में नाटक व रंगमंच के प्रति रूचि जागृत होगी।
- छात्राएँ हिन्दी नाटक व रंगमंच विधा से परिचित हो सकेंगी ।
- पठित नाटकों के आधार पर नाटक के क्रमिक बदलते स्वरुप से परिचित हो सकेंगी ।
- छात्राएँ शोध हेतु नवीन क्षेत्र का चयन कर पायेंगी तथा रोजगार हेतु भी विविध रंगमंचीय संस्थानों से जुड़ सकेंगी ।
- छात्राएँ अपनी परम्परागत नाट्य विधा से जुड़ सकेंगी।

खण्ड –1

(क) अंधेर नगरी – भारतेन्दु,वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

(ख) चन्द्रगुप्त – जयशंकर प्रसाद,विश्व बुक प्राइवेट लिमिटेड, 2017

खण्ड –2

अंधायुग – धर्मवीर भारती, किताब घर, इलाहाबाद, 2004

खण्ड – 3

आषाढ़ का एक दिन – मोहन राकेश,राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली 2008

सहायक पुस्तकें –

1. शर्मा ,रामविलास, (1966), *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
2. वाजपेयी,नन्ददुलारे, (1997), *जयशंकर प्रसाद,* हिमाचल, भारतीय भण्डार।
3. चातक, गोविन्द, (1972), *प्रसाद के नाटक स्वरूप एवं संरचना,* दिल्ली, आत्माराम प्रकाशन।
4. डॉ. नगेन्द्र, (1998), *हिन्दी के आधुनिक नाटक,* दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
5. ओझा, दशरथ, (2013), *हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास,* दिल्ली, राजपाल प्रकाशन।
6. चातक, गोविन्द, (1984), *आधुनिक नाटक का मसीहा* मोहन राकेश, दिल्ली, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन।

7. तनेजा, जयदेव, (1998), *अंधायुग : पाठ और प्रदर्शन,* नई दिल्ली, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय।

8. मिश्र, डॉ. उर्मिला, (1990), *आधुनिकता और मोहन राकेश,* वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन।

9. शर्मा, जगदीश, (1975*), मोहन राकेश की रंगदृष्टि,* दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन।

ई–सामग्री स्त्रोत :

http://egyankosh.ac.in/

https://epgp.inflibnet.ac.in/

HIND 515 हिन्दी आलोचना

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम –

- आलोचना विधा के शिक्षण से छात्राओं में साहित्यिक आंदोलनों एवं कृतियों के मूल्यांकन की बौद्धिक क्षमता विकसित हो पाएगी।
- रचनाओं के सामाजिक प्रभाव एवं साहित्यिक महत्व का अभिज्ञान हो पाएगा।
- नवीन आलोचना शैलियों की समझ विकसित हो पाएगी।
- सुदृढ़ एवं स्पष्ट गद्य लेखन में समर्थ हो सकेंगी ।

खण्ड 1 :

हिन्दी आलोचना का इतिहास

1. हिन्दी आलोचना : उद्‌भव एवं विकास
2. भारतेंदु युगीन हिन्दी आलोचना : स्वरूप एवं योगदान
3. द्विवेदी युगीन हिन्दी आलोचना : आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी एवं मिश्र बंधु
4. शुक्ल युग : आचार्य रामचंद्र शुक्ल के समीक्षा सिद्धांत, प्रमुख कृतियाँ
5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की व्यावहारिक आलोचना

खण्ड 2 :

शुक्लोत्तर आलोचना

1. स्वच्छंदतावादी आलोचना : आचार्य नंद दुलारे बाजपेयी
2. छायावादी कवियों की आलोचना दृष्टि : जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रा नंदन पंत, महादेवी वर्मा
3. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के समीक्षा सिद्धांत एवं प्रमुख कृतियाँ
4. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की इतिहास दृष्टि
5. रस सिद्धांत का पुनर्मूल्यांकन और डॉ. नगेंद्र की आलोचना दृष्टि

खण्ड 3 :

नवीन समीक्षा पद्धतियाँ

1. मार्क्सवादी समीक्षा एवं डॉ. रामविलास शर्मा
2. मनोविश्लेषणवादी आलोचना
3. नयी कविता के संदर्भ में डॉ. नामवर सिंह एवं लक्ष्मीकांत वर्मा की आलोचना दृष्टि
4. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी एवं डॉ. बच्चन सिंह की आलोचना

सहायक पुस्तकें –

1. शर्मा, रामविलास, (1975), *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
2. शर्मा, रामविलास, (1977), *महावीर प्रसाद और हिन्दी नवजागरण,* कोलकाता, आनन्द प्रकाशन।
3. त्रिपाठी, विश्वनाथ, (2007), *हिन्दी आलोचना,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
4. नवल, नंदकिशोर, (2004), *हिन्दी आलोचना का विकास,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
5. शुक्ल, रामचन्द्र, (2012), *चिन्तामणि, 1, 2, 3, 4,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
6. शुक्ल, रामचन्द्र, (1950), *रस मीमांसा,* काशी, नागरी प्रचारिणी सभा।
7. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, (2005), *हिन्दी साहित्य की भूमिका,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।

8. शर्मा, रामविलास, (2009), *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

9. शर्मा, रामविलास, (1981), *परम्परा का मूल्यांकन,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।

10. पंत, सुमित्रानंदन, (1965), *छायावाद : पुनर्मूल्यांकन,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।

11. प्रसाद, जयशंकर, *–काव्य, कला व अन्य निबन्ध –*ई–पुस्तकालय।

12. निराला, (1976), – प्रबंध प्रतिमा, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।

13. डॉ. नगेन्द्र, (1973), *रस सिद्धान्त,* दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस।

14. मिश्र, शिवकुमार, (1980), *–मार्क्सवादी साहित्य चिंतन इतिहास तथा सिद्धान्त,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।

15. सिंह, नामवर, (1978), *इतिहास और आलोचना,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।

16. सिंह, नामवर, (2003), *दूसरी परम्परा की खोज,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।

17. पाण्डेय, मैनेजर, (2003), *साहित्य और इतिहास दृष्टि,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन।

18. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, (2014), *आलोचना का समाजशास्त्र,* दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग।

19. मुद्राराक्षस, (2004), *आलोचना का समाजशास्त्र,* दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस।

20. सिंह, भरत, (2000), *प्रतिश्रुति और परिवर्तन,* दिल्ली, स्वराज प्रकाशन।

21. सक्सेना, प्रदीप, (1996), *1857 और भारतीय नवजागरण,* पंचकुला, आधार प्रकाशन।

22. रावत, रमेश, (1997), *मुक्तिबोध की आलोचना–प्रक्रिया,* जयपुर, पंचशील प्रकाशन।

23. वर्मा,लक्ष्मीकांत, (1995), *नई कविता के प्रतिमान,* इलाहाबाद, भारती प्रेस प्रकाशन।

24. जैन, निर्मला, (2006), *हिन्दी आलोचना,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।

25. सिंह ,नामवर, (2012), *आलोचना और विचारधारा,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन।

26. पाण्डेय, मैनेजर, (2005), *आलोचना की सामाजिकता,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन।

27. मुक्तिबोध, गजानन माधव, (2008*), नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।

28. पाण्डेय, मैनेजर, (1989*), साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका,* चंडीगढ़, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी।

ई–सामग्री स्त्रोत–

http://egyankosh.ac.in/,

vle.du.ac.in

HIND 508 पाश्चात्य साहित्यालोचन

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम–

- पाश्चात्य साहित्यालोचन की अवधारणाओं का सैद्धांतिक अभिज्ञान हो सकेगा।
- काव्यशास्त्रीय प्रतिमानों के साथ ही नवीन आलोचना पद्धतियों से परिचित हो सकेंगी।
- विभिन्न पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय आंदोलनों एवं उनके साहित्यगत प्रभावों का आलोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगी।
- साहित्य रचनाओं की सैद्धांतिक प्रतिमानों के आधार पर समीक्षा करने में सक्षम हो सकेंगी।

खण्ड – 1

(1) अरस्तू–अनुकृति, विरेचन तथा त्रासदी सिद्धांत

(2) लोंजाइनस – उदात्त की अवधारणा

(3) क्रोचे–अभिव्यंजनावाद

खण्ड – 2

(1) वड्र्सवर्थ–कविता की परिभाषा

(2) मैथ्यू आर्नल्ड–आलोचना का स्वरूप

(3) रिचर्ड्स–काव्य मूल्य, संप्रेषण

(4) इलियट – निर्वैयक्तिकता

खण्ड –3

आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ :

(1) नई समीक्षा

(2) संरचनावाद एवं शैली विज्ञान

(3) उत्तर आधुनिकता

सहायक पुस्तकें –

1. सं. डॉ. नगेन्द्र, सिन्हा, सावित्री, (1989), *पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा,* दिल्ली विश्वविद्यालय।
2. बाली, तारकनाथ, (1974), *पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास,* दिल्ली, मैकमिलन प्रकाशन।
3. गुप्त, शांतिस्वरूप, (1965), *पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त,* नई दिल्ली, अशोक प्रकाशन।
4. डॉ. नगेन्द्र, (1975), *पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र : सिद्धान्त और परिदृश्य,* नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस।
5. जैन,निर्मला, (1970), *प्लेटो के काव्य सिद्धान्त,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
6. सं. डॉ. नगेन्द्र, (1985), *अरस्तू का काव्यशास्त्र,* दिल्ली, अनुसन्धान परिषद दिल्ली विश्वविद्यालय।
7. डॉ. नगेन्द्र, (1973), *काव्य के उदात्त तत्व,* नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो।
8. रेनेवेले, आस्टिन वारिन, (1989), *साहित्य सिद्धान्त अनुदित,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
9. जैन,निर्मला (1965), *पाश्चात्य साहित्य चिंतन,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन।

ई–सामग्री स्रोत :

http://egyankosh.ac.in/

https://epgp.inflibnet.ac.in/

HIND 502 छायावादोत्तर कविता

Max. Marks : 100	**L T P C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5 0 0 5**

अपेक्षित परिणाम –

- छायावादोत्तर काव्यांदोलनों के कारणों के विवेचन से छात्राओं की हिन्दी साहित्य के परिप्रेक्ष्य में तार्किक एवं मानसिक क्षमता में वृद्धि हो पाएगी।
- स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों का साहित्य और समाज पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करने में सक्षम हो सकेंगी।
- काव्यांदोलनों की प्रमुख प्रवृत्तियों एवं कवियों के लेखन से परिचय प्राप्त कर सकेंगी।
- साहित्य और समाज के विश्लेषण की सूक्ष्म चिंतन दृष्टि को विकसित कर सकेंगी।
- नवीन शिल्प प्रविधियों से परिचय प्राप्त कर सकेंगी।
- भारतीय काव्यधारा पर पड़े पाश्चात्य काव्यांदोलनों के प्रभावों को समझने की क्षमता विकसित कर सकेंगी।

खण्ड–1

(क) कुरुक्षेत्र – रामधारी सिंह दिनकर, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, 2015
(व्याख्या के लिये सर्ग–2, 4)

(ख) सर्जना के क्षण – अज्ञेय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2012
(पहला दौंगरा, कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला, नदी के द्वीप, आज तुम शब्द न दो उधार)

खण्ड–2

(क) चाँद का मुँह टेढ़ा है – मुक्तिबोध, भारतीय ज्ञानपीठ, इलाहाबाद, 1964 (अंधेरे में)

(ख) प्रतिनिधि कविताएँ– नागार्जुन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2018
(बहुत दिनों के बाद, सत्य, प्रेत का बयान, अकाल और उसके बाद, आओ रानी हम ढोएँगे पालकी)

खण्ड–3

(क) आत्महत्या के विरुद्ध – रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2009

(नेता क्षमा करें, अपने आप और बेकार, नयी हँसी, अकाल, मेरा प्रतिनिधि, आत्महत्या के विरुद्ध)

(ख) प्रतिनिधि कविताएँ–शमशेर बहादुर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2018

(ओ मेरे घर, चुका भी हूँ मैं नहीं, राग, एक नीला दरिया बरस रहा है)

सहायक पुस्तकें –

1. सिन्हा, सावित्री, (1963), *युगचारण दिनकर,* दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस।
2. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, (1968), *अज्ञेय और आधुनिक रचना,* कलकत्ता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन।
3. तिवारी, विश्वनाथ प्रसाद, (1959), *अज्ञेय,* दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस।
4. सिंह, नामवर, (1968), *कविता के नए प्रतिमान,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
5. गुप्त, जगदीश, (2000), *नई कविता,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
6. मुक्तिबोध, गजानन माधव, (1977), *नई कविता का आत्म संघर्ष तथा अन्य निबन्ध,* नागपुर, विश्व भारती प्रकाशन।
7. माथुर, गिरिजा कुमार, (1973), *नई कविता : सीमाएँ और सम्भावनाएँ,* दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
8. शर्मा, रामविलास, (1978), *नई कविता और अस्तित्ववाद,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
9. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, (1997), *तारसप्तक से गद्य कविता,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
10. मिश्र, शिवकुमार, (2016), *प्रगतिवाद,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
11. नवल, नंदकिशोर, (2014), *मुक्तिबोध : संवेदना और शिल्प,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
12. जैन, सं. डॉ. निर्मला, (1994), *अंतःस्तल का पूरा विप्लव–अंधेरे में,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन।

ई–सामग्री स्रोत–

http://egyankosh.ac.in/ ,

vle.du.ac.in

चतुर्थ समसत्र

HIND 513 कथेतर गद्य विधाएँ

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम –

- आधुनिक कथेतर गद्य विधाओं के अध्ययन से साहित्य की समुचित एवम् व्यापक समझ विकसित हो सकेगी।
- छात्राओं के तुलनात्मक ज्ञान के लिए सहायक सिद्ध होगा।
- बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।
- विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी यह अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगा।

खण्ड–1

निबन्ध :

क. साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है – बालकृष्ण भट्ट

ख. कविता क्या है – रामचन्द्र शुक्ल

ग. कुटज – हजारी प्रसाद द्विवेदी

घ. मजदूरी और प्रेम – अध्यापक पूर्ण सिंह

खण्ड–2

जीवनी

कलम का सिपाही – अमृतराय,साहित्य अकादमी 1962

खण्ड–3

1. संस्मरण

   क. शृंखला की कड़ियाँ – महादेवी वर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1942

2. रिपोर्ताज

   ख. ऋण जल धन जल – फणीश्वरनाथ रेणु,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1977

सहायक पुस्तकें –

1. तिवारी, रामचन्द्र, (2015), *हिन्दी का गद्य साहित्य,* वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन।

2. डॉ. नगेन्द्र, (1993), *हिन्दी वाङ्मय बीसवीं शताब्दी,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
3. सक्सेना, डॉ. द्वारिकाप्रसाद, (1983), *हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्धकार,* आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. भाटिया, कैलाशचन्द, (1979), *हिन्दी साहित्य की नवीन विधाएँ,* दिल्ली, यूनाइटेड़, बुक हाउस।
5. डॉ. शशिभूषण, (2002), *हिन्दी साहित्य विधाएँ और दिशाएँ,* दिल्ली, आधुनिक प्रकाशन।
6. असद, डॉ. माजदा, (1986), *गद्य की नयी विधाओं का विकास,* नई दिल्ली, ग्रन्थ अकादमी।
7. वार्ष्णेय, डॉ. लक्ष्मी सागर, (1954), *आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका,* इलाहाबाद, हिन्दी परिषद।
8. शर्मा, डॉ. रामविलास, (1981), *प्रेमचन्द और उनका युग,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
9. शर्मा, मक्खनलाल, (1974), *महादेवी का गद्य साहित्य,* दिल्ली, अशोक प्रकाशन।
10. वाजपेयी, डॉ. आद्या, (1998), *आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य में मानवतावादी दृष्टि,* राजस्थान, नवजीवन प्रकाशन।

ई–सामग्री स्रोत :

http://egyankosh.ac.in/

https://epgp.inflibnet.ac.in/

HIND 514 हिन्दी उपन्यास

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम –

- हिन्दी उपन्यासों में युगीन प्रभावों एवं परिवर्तनों से परिचित हो सकेंगी।
- चयनित उपन्यासकारों के कृतित्व एवं रचना शैली का विवेचनात्मक अध्ययन कर सकेंगी।
- पाठ्यक्रम में चयनित उपन्यासों के माध्यम से मानवीय चेतना एवं विभिन्न साहित्यिक सरोकारों का ज्ञान हो सकेगा।

- स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में दलित विमर्श, नारी विमर्श के नवीन आयामों का अभिज्ञान हो सकेगा।
- छात्राओं की अध्ययन अभिरूचि एवं लेखन कौशल में परिनिष्ठता आ सकेगी।

खण्ड : 1

1. शेखर : एक जीवनी खण्ड 1,2 – सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2011
   (व्याख्या के लिए केवल प्रथम खण्ड)
2. बाणभट्ट की आत्मकथा – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2009

खण्ड : 2

1. धरती धन न अपना : जगदीश चन्द्र,राजकमल पेपरबेक्स, दिल्ली, 2007
2. राग दरबारी : श्रीलाल शुक्ल,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2008

खण्ड : 3

हिन्दी उपन्यास : प्रवृत्तिमूलक अध्ययन

1. मनोवैज्ञानिक उपन्यास
2. ऐतिहासिक उपन्यास
3. दलित चेतना
4. राजनीतिक चेतना

सहायक पुस्तकें –

1. तिवारी, रामचन्द्र, (1992), *हिन्दी का गद्य साहित्य,* दिल्ली, विश्वविद्यालय प्रकाशन
2. राय, गोपाल, (2012), *हिन्दी उपन्यास का इतिहास,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
3. सिंह, त्रिभुवन, (1961), हिन्दी *उपन्यास और यथार्थवाद,* वाराणसी, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
4. सिंह, कुँवरपाल, (1976), *हिन्दी उपन्यास और सामाजिक चेतना,* नई दिल्ली, पाण्डुलिपि प्रकाशन
5. मिश्र, रामदरश, (1990), *हिन्दी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

6. वर्मा, कांति, (1966), *स्वातन्त्र्योतर हिन्दी उपन्यास,* दिल्ली, रामचन्द्र एण्ड कम्पनी

7. यादव, राजेन्द्र, (1981), *अठारह उपन्यास समीक्षाएँ,* नई दिल्ली, अक्षर प्रकाशन

8. मधुरेश, (1989), *समकालीन उपन्यास और संवेदना और सरोकार,* बीकानेर, धरती प्रकाशन

9. चौहान, सूरजपाल, (2000), *समकालीन हिन्दी दलित साहित्य एवं विचार विमर्श,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन

ई–सामग्री स्रोत :

http://egyankosh.ac.in/

vle.du.ac.in

HIND 509 पत्रकारिता

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम

- पत्रकारिता के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं को खोज सकेंगी।
- हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों में संवाददाता, विशेष संवाददाता और संपादक के पदों हेतु योग्यता अर्जित कर सकेंगी।
- इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में फीचर लेखन, समाचार लेखन, समाचार वाचन आदि के क्षेत्र में क्षमता विकसित कर सकेंगी।
- स्वतंत्र पत्रकारिता के गुणों एवं तार्किक क्षमता का विकास कर पायेंगी।
- सामयिक परिस्थितियों में मीडिया की भूमिका से अवगत हो सकेंगी।

खण्ड – 1

भारत में पत्रकारिता का उद्‌भव एवं विकास

1. भारतीय नवजागरण और हिन्दी पत्रकारिता
2. राष्ट्रीय आन्दोलन और हिन्दी पत्रकारिता
3. स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी पत्रकारिता (प्रिंट मीडिया)

खण्ड –2

पत्रकारिता के विविध आयाम

1. समाचार के मूल तत्त्व, समाचार संकलन तथा लेखन के मुख्य आयाम
2. समाचार के विभिन्न स्रोत
3. सम्पादन कला के सम्पादन सिद्धान्त : शीर्षकीकरण, पृष्ठविन्यास और समाचार पत्र की प्रस्तुति प्रक्रिया
4. कॉपी राईट, प्रेस काउंसिल, आर.टी.आई. तथा आचार संहिता

खण्ड–3

पत्रकारिता : समकालीन संदर्भ

1. स्वांत्र्योत्तर पत्रकारिता : मुख्य प्रवृत्तियाँ
2. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हिन्दी पत्रकारिता
3. फोटो पत्रकारिता

सहायक पुस्तकें –

1. पन्त, नवीनचन्द्र (2007), *पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त,* नई दिल्ली, कनिष्क पब्लिशर्स
2. पन्त, नवीनचन्द्र (2004), *समाचार लेखन एवं संपादन,* नई दिल्ली, कनिष्क पब्लिशर्स
3. गुप्ता, ओम (2010), *पत्रकारिता और कानून,* नई दिल्ली, कनिष्क पब्लिशर्स
4. गुप्ता, ओम (2002), *प्रसारण और फोटो पत्रकारिता,* नई दिल्ली, कनिष्क पब्लिशर्स
5. शर्मा, आलोक, डॉ. ठाकुरदत्त (2000), *हिन्दी पत्रकारिता और दूरसंचार,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
6. गोदरे ,विनोद, (2000), *हिन्दी पत्रकारिता–स्वरूप और सन्दर्भ,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
7. अगनानी, कन्हैयालाल, (1998), *पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त,* राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
8. भानावत, डॉ. संजीव, (1993), *प्रेस कानून और पत्रकारिता,* जयपुर, सिद्धश्री प्रकाशन
9. सिंह ,ओमप्रकाश, (2004), *संचार और पत्रकारिता के विविध आयाम,* नई दिल्ली, क्लासिकल पब्लिशिंग हाउस
10. वापती ,जमनालाल (1999), *पत्रकारिता के सिद्धान्त,* जयपुर, राजस्थान प्रकाशन
11. कोठारी, गुलाब, (2008), *समाचार पत्र प्रबंधन,* दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन

ई–सामग्री स्रोत :

http://egyankosh.ac.in/

HIND 507P परियोजना

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**0**	**0**	**10**	**5**

अपेक्षित परिणाम

- भावी शोध के लिए छात्राओं को उचित जानकारी मिल सकेगी।
- शोध–प्रबन्ध लेखन के आवश्यक तत्वों से परिचित हो सकेगी।
- रचनाओं के आलोचनात्मक मूल्यांकन की प्रवृत्ति विकसित हो सकेगी।
- पत्र व आलेख लेखन तथा प्रस्तुतिकरण की शैली से परिचित हो सकेंगी।

  प्रत्येक विद्यार्थी किसी एक विषय का चयन अध्यापकों के साथ मिलकर परियोजना कार्य के लिए करेगी। तत्पश्चात विद्यार्थी को विषय पर 40–50 पृष्ठों का आलेख टंकित रूप में मुख्य परीक्षा के तीन सप्ताह पहले जमा करना होगा।

अंक विभाजन :

60 अंक – परियोजना कार्य का मूल्यांकन बाह्य परीक्षक करेगा।

40 अंक –सेमिनार एवं साक्षात्कार।

विषयाधारित चयनित पाठ्यक्रम समूह
HIND 516 प्रवासी साहित्य

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम –

- प्रवासी हिन्दी साहित्य की अवधारणा से परिचित हो सकेंगी।
- भारत के विभिन्न देशों से प्रतिपक्षीय साहित्यिक संबंधों को जान सकेंगी।
- गिरमिटिया मजदूरों के रूप में भारतवंशियों के वैश्विक इतिहास का अभिज्ञान हो पाएगा।
- विदेशों की संस्कृति के भारतीय संस्कृति से मिलन के अंतर्संबंध को पहचान सकेंगी।
- हिन्दी भाषा एवं साहित्य के वैश्विक परिप्रेक्ष्य एवं उसके विस्तार से परिचित हो सकेंगी।

खण्ड 1 :

1. प्रवासी साहित्य : अवधारणा, स्वरूप एवं विकास
   (मॉरीशस, अमेरिका एवं इंग्लैंड के विशेष संदर्भ में)
2. लाल पसीना – अभिमन्यु अनत (मॉरीशस), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010

खण्ड 2 :

1. लौटना – सुषम बेदी (अमेरिका), पराग प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992
2. कुछ गाँव–गाँव, कुछ शहर–शहर – नीना पॉल (ब्रिटेन), यश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2010

खण्ड 3 :

1. कोख का किराया – तेजेन्द्र शर्मा (ब्रिटेन)
2. निष्कलंक अभियोगी – पुष्पा सक्सेना (अमेरिका)
3. पिंजरा – नीलम मलकानिया (जापान)
4. विसर्जन से पहले – सुरेशचंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे)
5. और जल गया उसका सर्वस्व – उषा राजे सक्सेना (ब्रिटेन)
6. क्वाँरी बहू – सुदर्शन प्रियदर्शनी (अमेरिका)
7. नमस्ते कौर्निश – पूर्णिमा वर्मन (शारजाह)
8. कारावास – उषा वर्मा (ब्रिटेन)

सहायक पुस्तकें –

1. गर्ग, सं. संध्या, (2017),*प्रवासी साहित्य : भाव और विचार,* दिल्ली , साहित्य संचय प्रकाशन
2. गोयनका, डॉ. कमल किशोर, (2008),*हिन्दी का प्रवासी साहित्य,* नई दिल्ली, स्वराज प्रकाशन
3. डॉ. रमा, (2017),*प्रवासी हिन्दी साहित्य – विविध आयाम,* नई दिल्ली, साहित्य संचय प्रकाशन
4. श्रीधर, प्रो. प्रदीप (2018), *प्रवासी हिन्दी साहित्य : दशा और दिशा,* नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन
5. वर्मा, सं. विमलेश कांति, (2016), *प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य,* नई दिल्ली, हिन्दी बुक सेन्टर
6. जोशी, अनिल, (2018), *प्रवासी लेखन : नई जमीन नया आसमान,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
7. तिवारी, डॉ. श्यामधर, (1997),*मॉरिशस में हिन्दी साहित्य का उद्‌भव और विकास,* दिल्ली, विनसर पब्लिशिंग कं0

ई सामग्री स्रोत :

http://egyankosh.ac.in/

HIND 510 विशिष्ट रचनाकार : प्रेमचन्द

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम

- कथाकार प्रेमचन्द के निबन्धकार व पत्रकार रूप से परिचित हो सकेंगी ।
- सृजनात्मक लेखन व पत्रकारिता में रुचि रखने वाली छात्राएँ पाठ्यक्रम से लाभान्वित हो सकेंगी।
- कोई भी साहित्यकार कालजयी किन अर्थों में बनता है, प्रेमचंद साहित्य के अध्ययन से इसे समझ सकेंगी।
- प्रेमचंद ने सत्ता व सामंतों की मिली भगत को पहचाना तथा जनता की तकलीफों को भी वाणी दी, इस अर्थ में भी वे साहित्यकार के दायित्व को समझ सकेंगी।

खण्ड–1

1. प्रेमचन्द की प्रतिनिधि कहानियाँ – संपादक भीष्म साहनी – व्याख्या एवं आलोचना निर्धारित कहानियाँ (बड़े घर की बेटी, नमक का दरोगा, बूढ़ी काकी, शतरंज के खिलाड़ी, सवा सेर गेहूँ, पूस की रात, ईदगाह, नशा, बड़े भाई साहब, कफन)

खण्ड–2

1. सेवा सदन – प्रेमचन्द, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 2005, (व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन)
2. रंगभूमि – प्रेमचन्द,नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, 2005, (व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन)

खण्ड–3

1. निबन्ध – हिन्दू सभ्यता और लोकहित, भारतेन्दु बाबू हरिश्चंद्र, कालिदास की कविता, पुराना जमाना : नया जमाना, स्वराज से किसका अहित होगा, मनुष्यता का अकाल। (प्रेमचंद के विचार, भाग–3, संस्थान प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, (व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन)
2. पत्रकारिता – देश की वर्तमान स्थिति, नये–नये सूबों की सनक, भारत में अंग्रेजी बैंकों के अन्धा–धुन्ध नफे, सुदिन अथवा कुदिन, आने वाला विधान और मिनिस्टर, मेरठ के मुकदमे का फैसला, भारत 1983 में,

कांग्रेस और सोशलिज्म, पण्डित नेहरू की आर्थिक व्यवस्था, हिन्दू सोशल लीग का फतवा, स्वराज्य के फायदे, देशी चीजों का प्रचार कैसे बढ़ सकता है। (प्रेमचंद के विचार, भाग–1,संस्थान प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003, (व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन)

सहायक पुस्तकें –

1. अमृतराय, (1992) *कलम का सिपाही,* इलाहाबाद, हंस प्रकाशन।
2. शर्मा, रामविलास, (1981), *प्रेमचन्द और उनका युग,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
3. गुप्त, रामदीन, (1961), *प्रेमचन्द और गाँधीवाद,* दिल्ली, हिन्दी साहित्य संसार।
4. देवी, शिवरानी ,(2005), *प्रेमचन्द घर में,* पश्चिम बंगाल, रोशनाई प्रकाशन।
5. शंभूनाथ, (1988), *प्रेमचन्द का पुनर्मूल्यांकन,* नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
6. जैदी, डॉ. शैलेश, (1978), *प्रेमचन्द का नवमूल्यांकन उपन्यास यात्रा,* अलीगढ़, यूनीवर्सिटी पब्लिशिंग हाउस।
7. सिंह, कुंवरपाल, (1990), *प्रेमचन्द और जनवादी साहित्य की परम्परा,* दिल्ली, भाषा प्रकाशन।
8. मदान, इन्द्रनाथ, (1989), *प्रेमचन्द प्रतिभा,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन।
9. सं. अमृतराय, (1962), *विविध प्रसंग भाग–1 ,2 ,3* इलाहाबाद, हंस प्रकाशन
10. डॉ. सत्येन्द्र, (1980), *प्रेमचन्द और उनकी कहानी कला,* आगरा, भारत रत्न भण्डार।

ई–सामग्री स्रोत :

http://egyankosh.ac.in/

HIND 512 विशिष्ट रचनाकार : सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम

- छात्राएँ कवि निराला के साहित्यिक व्यक्तित्व के अन्य पक्षों से परिचित हो सकेंगी।
- साहित्यकार की संवेदना व दायित्व को समझ सकेंगी ।

- छात्राएँ निराला के साहित्यिक अवदान से परिचित हो सकेंगी ।
- छायावाद की उद्भवकालीन स्थितियों व साहित्यिक प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगी।
- शोध हेतु निराला साहित्य के अन्यान्य पक्षों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगी।

खण्ड–1

कविताएँ (जूही की कली, कुकुरमुत्ता, बादल राग, तुलसीदास, भारती वन्दना, अर्चना, तुम और मैं, मैं अकेला) – व्याख्या एवं आलोचना

खण्ड–2

1. अप्सरा – निराला, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2007 (आलोचनात्मक अध्ययन एवं व्याख्या)
2. निरूपमा– निराला, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,2004 (आलोचनात्मक अध्ययन एवं व्याख्या)

खण्ड–3

1. कुल्ली भाट – निराला, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,2004 (आलोचनात्मक अध्ययन एवं व्याख्या)
2. चतुरी चमार – निराला, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,2010 (आलोचनात्मक अध्ययन एवं व्याख्या)

सहायक पुस्तकें –

1. सिंह, बच्चन, (1947), *क्रान्तिकारी कवि निराला,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
2. नागार्जुन, (1963), *निराला : एक व्यक्ति का युग,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
3. पाण्डेय, गंगाप्रसाद, (1968), *महाप्राण निराला,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
4. शर्मा, डॉ. रामविलास, (2009), *निराला की साहित्य साधना,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
5. सिंह, दूधनाथ, (2004), *निराला : आत्महंता आस्था,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
6. सिंह, डॉ. नामवर, (2006), *छायावाद,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
7. सिंह, डॉ. बच्चन, (2005), *निराला की कविताएँ,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।

8. वार्ष्णेय, डॉ. कुसुम, (1963), *निराला का कथा साहित्य,* इलाहाबाद, मित्र प्रकाशन।

9. दीक्षित, डॉ. सूर्यप्रसाद, (1968), *निराला का गद्य,* दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन।

10. दीक्षित, डॉ. निर्मल, (2012), *निराला का गद्य साहित्य,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।

11. जिन्दल, डॉ. निर्मल, (2012), *निराला का गद्य साहित्य,* दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।

12. बालोत, डॉ. आशिक, (1998), *निराला के कथा–साहित्य में स्वच्छंदतावादी तत्व,* अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर।

ई–सामग्री स्रोत :

http://egyankosh.ac.in/

https://epgp.inflibnet.ac.in/

HIND 511 विशिष्ट रचनाकार : सूरदास

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम

- छात्राएँ सूरदास के काव्य की विविध प्रवृतियों से परिचित हो सकेंगी।
- सिद्धों, नाथों व निर्गुणवादियों के खण्डन–मंडन वादी दृष्टिकोण के मध्य छात्राएँ सूरदास की प्रेमाभक्ति व भ्रमरगीत के महत्व को समझ सकेंगी।
- छात्राएँ भक्तिकालीन विविध साहित्यिक सन्दर्भों को समझ सकेंगी।
- छात्राएँ कृष्णभक्ति शाखा के लोकवादी स्वरूप से परिचित हो सकेंगी।
- भक्तिकाल को समझने की नवीन दृष्टि छात्राओं में विकसित हो सकेगी।

खण्ड–1

सूर पंचरत्न – सं. लाला भगवानदीन – व्याख्या एवं आलोचना

निर्धारित पद (विनय–आरम्भ के 10 पद, बाल लीला – आरम्भ के 10 पद)

खण्ड–2

सूर पंचरत्न – सं. लाला भगवानदीन – व्याख्या एवं आलोचना

निर्धारित पद (रूप माधुरी – आरम्भ के 15 पद, मुरली माधुरी आरम्भ के 15 पद)

खण्ड–3

भ्रमरगीत – सं. रामचन्द्र शुक्ल, विश्वविद्यालय प्रकाशन, इलाहाबाद, 2007 (आरम्भ के 35 पद – व्याख्या एवं आलोचना)

सहायक पुस्तकें –

1. गुप्त, दीनदयाल, (1985), *अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
2. वर्मा, डॉ. ब्रजेश्वर, (1994), *सूरदास,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
3. शर्मा, डॉ. हरवंशलाल, (2015), *सूर और उनका साहित्य,* अलीगढ़, भारत प्रकाशन।
4. भ्रमर, डॉ. रविन्द्र, (2017), *हिन्दी भक्ति साहित्य में लोक तत्व,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
5. डॉ. सत्येन्द्र, (1965), *ब्रज लोक संस्कृति,* मथुरा, साहित्य मण्डल।
6. शुक्ल, डॉ. गोवर्धननाथ, (1963), *परमानन्द और वल्लभ सम्प्रदाय,* अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर
7. शुक्ल, विश्वनाथ, (1966), *हिन्दी कृष्ण भक्ति काव्य पर श्रीमद्भागवत का प्रभाव,* अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर।
8. शास्त्री, डॉ. गिरधारीलाल, (1977), *हिन्दी कृष्ण भक्ति काव्य की पृष्ठभूमि,* अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर।
9. पाण्डेय, मैनेजर, (1993), *सूरदास और उनका काव्य,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
10. श्रीवास्तव, स्नेहलता (1972), *हिन्दी में भ्रमरगीत काव्य और उसकी परम्परा,* अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर।
11. सिंह, विजय बहादुर, (2016), *सूर के पद और रचना दृष्टि,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
12. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, (2017), *त्रिवेणी,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन।

ई–सामग्री स्रोत :

http://egyankosh.ac.in/

HIND 501 भारतीय साहित्य

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम –

- छात्राएँ विविध भाषाओं में लिखित साहित्य से परिचित हो सकेंगी।
- भारतीय साहित्य के अध्ययन से तुलनात्मक दृष्टि विकसित कर सकेंगी।
- शोधपरक –दृष्टि विकसित कर सकेंगी।
- विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी यह अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगा।

खण्ड –1

भारतीय साहित्य सैद्धान्तिक अवधारणा

(क) भारतीय साहित्य का स्वरूप

(ख) भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ

(ग) भारतीय साहित्य में प्रतिबिम्बित परिवेश व मूल्य

खण्ड – 2

कथा साहित्य

(क) 1084 वें की माँ – महाश्वेता देवी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2014

(ख) रवीन्द्रनाथ टैगोर की कहानियाँ–रवीन्द्रनाथ टैगोर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2010

(सजा, दीदी, मानभंग, स्त्रीर पत्र, अपरिचिता)

खण्ड –3

कविता व नाट्य साहित्य

(क) सुब्रह्मण्य भारती की कविताएँ –कवि सुब्रह्मण्य भारती (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्)

(वन्देमातरम्, भारत माँ की अनमोल ध्वजा, निर्भय, महात्मा गाँधी, स्त्री स्वातन्त्र्य)

(ख) हयवदन–गिरीश कर्नाड, अनु. बी.वी, कारन्त,राधाकृष्ण प्रकाशन, 1972

सहायक पुस्तकें –

1. डॉ. नगेन्द्र, (1989), *भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास,* दिल्ली,साहित्य अकादमी।
2. के सच्चिदानन्दन, (2003), *भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
3. डॉ. आरसु, (2011), *भारतीय साहित्य : आशा और आस्था,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन।
4. त्रिपाठी, डॉ. राम छबीला, (1996), *भारतीय साहित्य,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
5. शर्मा, रामविलास, (1986), *भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ,* दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
6. गौतम, सं. डॉ. मूलचन्द, (2009), *भारतीय साहित्य,* दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन।

ई–सामग्री स्रोत :

http://egyankosh.ac.in/

https://epgp.inflibnet.ac.in/

HIND 521 विशिष्ट रचनाकार : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
(CA: 40 + ESA: 60)	**5**	**0**	**0**	**5**

अपेक्षित परिणाम –

1. छात्राएँ इतिहासकार एवं आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल के सैद्धांतिक मानदण्डों और आलोचना दृष्टि से परिचित हो सकेंगी।
2. भारतीय और पाश्चात्य आलोचना सिद्धांतों का आधुनिक साहित्य के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण कर सकेंगी।
3. साहित्येतिहास के विभिन्न कालखण्डों के परिवर्तन की परिस्थितियों के विवेचन में सक्षम होंगी।
4. निबंध एवं आलोचना की विभिन्न शैलियों के ज्ञान से सृजनात्मक लेखन एवं मौलिक चिंतन दृष्टि को विकसित कर सकेंगी।

खण्ड 1 :

सैद्धांतिक आलोचना – रस, अलंकार एवं वक्रोक्ति संबंधी दृष्टि, काव्य प्रयोजन, काव्य की परिभाषा, साधारणीकरण एवं सौन्दर्य दृष्टि, लोकमंगल की अवधारणा,

आनंद की सिद्धावस्था, आनंद की साधनावस्था, अभिव्यंजनावाद, बिंब एवं कल्पना सम्बंधी विचार।

खण्ड 2:

व्यावहारिक आलोचना : त्रिवेणी, जायसी ग्रंथावली (भूमिका), भ्रमरगीत सार (भूमिका), रस मीमांसा।

खण्ड 3:

इतिहास दृष्टि : हिन्दी साहित्य का इतिहास – साहित्येतिहास सम्बंधी दृष्टि, काल विभाजन और नामकरण, प्रमुख स्थापनाएं और विवाद के सूत्र।

संदर्भ पुस्तकें –

1. शुक्ल, रामचन्द्र, (2012*), चिन्तामणि, 1, 2, 3, 4,* इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
2. शुक्ल, रामचन्द्र, (1950), *रस मीमांसा,* काशी, नागरी प्रचारिणी सभा।
3. शर्मा, रामविलास, (1980), *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना,* आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. शुक्ल, रामचन्द्र, (1963), *भ्रमरगीत,* काशी, नागरी प्रचारिणी सभा।
5. शुक्ल, रामचन्द्र, (2002), *जायसी ग्रंथावली,* काशी, नागरी प्रचारिणी सभा।
6. शुक्ल, रामचन्द्र, (2017), *त्रिवेणी,* नई दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन।
7. शुक्ल, रामचन्द्र, (2002), *हिन्दी साहित्य का इतिहास,* नई दिल्ली, प्रकाशन संस्थान।
8. सक्सेना, लालता प्रसाद, (1973), *निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल,* जयपुर, निर्मल प्रकाशन।
9. बंसल एवं सिंहल, पुष्पा एवं शशिभूषण, (1986), *आचार्य रामचंद्र शुक्ल के बहुमुखी कृतित्व का सर्वांगीण विवेचन,* नई दिल्ली, ऋषभचरण जैन एवं संतति।

स्वाध्यायाधारित चयनित पाठ्यक्रम समूह

HIND 517R साहित्य और सिनेमा

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
ESA: 100	**0**	**0**	**4**	**2**

अपेक्षित परिणाम –

- सिनेमा के जनोपयोगी पक्ष से परिचित होंगी।
- सिनेमा में साहित्य की प्रभावी भूमिका को समझ सकेंगी।
- हिन्दी साहित्य की प्रमुख रचनाओं पर आधारित फिल्मों के माध्यम से पाठक और दर्शक के रूप में पड़ने वाले दोहरे प्रभाव के विश्लेषण में सक्षम होंगी।
- प्रमुख साहित्यकारों और निर्देशकों के सृजन और निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन कर सकेंगी।

साहित्य और सिनेमा विषयक अध्ययन आधुनिक हिंदी साहित्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। सिनेमा और साहित्य का धरातल अलग–अलग है। सिनेमा शुध्द मनोरंजन प्रधान होता है, जिसमें दर्शकों की मांग का ख्याल रखा जाता है, जबकि साहित्य संवेदना और अनुभूति प्रधान होता है। साहित्यकार अपनी निजी संवेदना और अनुभूति को केंद्र में रखकर समाज के यथार्थ रूप को सामने लाने का प्रयास करता है।इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राएं साहित्य व सिनेमा के आपसी सम्बन्ध की समझ विकसित कर पाने में समर्थ होंगी।

- **हिन्दी साहित्यकार और सिनेमा**

  सिनेमा और जीवन–प्रेमचंद

  सिनेमा को काली मैया उठा ले जाएँ–वृन्दावनलाल वर्मा

  फिल्म की सार्वजनीन सम्भावनाएँ–जैनेन्द्र कुमार

  (मृत्युंजय (सं.), (1997), हिंदी सिनेमा का सच, कलकत्ता, समकालीन सृजन, अंक–17 नई दिल्ली)

- **प्रमुख निर्देशक और हिन्दी सिनेमा**

  सामाजिक यथार्थ का बदलता हुआ सन्दर्भ–ख्वाजा अहमद अब्बास

  जरूरी है फिल्म को गंभीरता से देखना –सत्यजीत राय सिनेमा और साहित्य–गुलज़ार

  मृत्युंजय (सं.), (1997), हिंदी सिनेमा का सच, कलकत्ता, समकालीन सृजन, अंक–17 नई दिल्ली)

- **साहित्य और सिनेमा का अन्तर्सम्बन्ध**

  1. चट्टोपाध्याय, शरतचंद्र (2002) – देवदास : नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन (लेखक और फिल्म जगत ,साहित्य और सिनेमा – तुलनात्मक अध्ययन)

2. प्रेमचंद, (2007), गोदान, नई दिल्ली ,राजपाल एंड सन्स

(लेखक और फिल्म जगत, साहित्य और सिनेमा –तुलनात्मक अध्ययन)

3. कमलेश्वर ,(2007), काली आंधी : नई दिल्ली, राजपाल एंड सन्स(लेखक और फिल्म जगत, साहित्य और सिनेमा–तुलनात्मक अध्ययन)

सहायक पुस्तकें –

1. पारख, जबरीमल्ल (2007), *लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ,* नई दिल्ली, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, प्राइवेट लिमिटेड,
2. पारख, जबरीमल्ल (2007*), हिंदी सिनेमा का समाजशास्त्र,* नई दिल्ली, ग्रंथ शिल्पी
3. मृत्युंजय (सं.), (1997), *हिंदी सिनेमा का सच,* कलकत्ता, समकालीन सृजन, अंक–17, नई दिल्ली
4. रज़ा, राही मासूम, (2003), *सिनेमा और संस्कृति,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
5. प्रियदर्शन, (2015), *नए दौर का नया सिनेमा,* नई दिल्ली,वाणी प्रकाशन
6. कुन्दे, पुरुषोत्तम (सं.), (2014), *साहित्य और सिनेमा,* गाज़ियाबाद, साहित्य संस्थान
7. अग्रवाल, उज्ज्वल (2017), *कथाकार कमलेश्वर और भारतीय सिनेमा,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
8. अख्तर, जावेद व नसरीन मुन्नी ,कबीर (2017), *सिनेमा के बारे में,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
9. ब्रह्मात्मज, अजय व शेखर, मयंक, (2017), *टॉकीज : सिनेमा का सफर,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
10. मिश्र, महेंद्र, (2017), *सत्यजीत राय : पाथेर पांचाली और फ़िल्म जगत,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

HIND 518R साहित्य और भारतीय संस्कृति

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
ESA: 100	**0**	**0**	**4**	**2**

अपेक्षित परिणाम –

- भारतीय संस्कृति की व्यापक परम्परा का ज्ञान हो सकेगा।
- साहित्य व संस्कृति के अन्तःसम्बन्धों को समझ सकेंगी।
- संस्कृति से जुड़े विषयों से अध्ययन विशद् व व्यापक हो सकेगा।

- मानवीय मूल्यों के विकास में सहायक हो सकेगा।

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है। विश्व की पहली और महान संस्कृति के रुप में भारतीय संस्कृति को माना जाता है। "विविधता में एकता" का कथन यहाँ पर आम है अर्थात् भारत एक विविधतापूर्ण देश है जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग अपनी संस्कृति और परंपरा के साथ शांतिपूर्ण तरीके से एक साथ रहते हैं। वर्तमान के संकटग्रस्त समय में विद्यार्थियों को भारतीय साहित्य के माध्यम से संस्कृति का ज्ञान होना अत्यंत आवशयक है। इसी उद्देश्य हेतु इस पाठ्यक्रम में भारतीय संस्कृति विषयक साहित्य को सम्मिलित किया गया है।

- **भारतीय संस्कृति**

  भारतीय जनता की रचना और हिन्दू संस्कृति का आविर्भाव, प्राचीन हिंदुत्व से विद्रोह, हिन्दू संस्कृति और इस्लाम

  संस्कृति के चार अध्याय– रामधारी सिंह दिनकर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, 2009

- **(क) हिंदी निबंध और भारतीय संस्कृति**
  - मेले का ऊँट– बालमुकुंद गुप्त,
  - अशोक के फूल– आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी,
  - सौंदर्य की उपयोगिता – रामविलास शर्मा

  श्रेष्ठ हिंदी निबंध– डॉ. अचला शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1989

- **(ख) हिंदी निबंध और भारतीय संस्कृति**

  दीपावली पर्व पर–विद्यानिवास मिश्र,

  रस आखेटक–कुबेरनाथ राय

  श्रेष्ठ हिंदी निबंध– डॉ. अचला शर्मा ,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ,1989

सहायक पुस्तकें –

1. शर्मा, डॉ. राधेश्याम, (सं), (2004),*साहित्य और संस्कृति चिंतन,* जयपुर बुक एन्क्लेव
2. सिंह, मुरली मनोहर व अन्य, (सं), (2009), *हिंदी–उर्दू साझा–संस्कृति,* नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट
3. मुक्तिबोध, गजानन माधव,(2017), *भारत : इतिहास और संस्कृति,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

4. राजकुमार, (2017), *हिंदी की साहित्यिक संस्कृति और भारतीय आधुनिकता,* नई दिल्ली ,राजकमल प्रकाशन

5. राठी, डॉ. वेदवती, (2013), *हिंदी ललित निबंध– स्वरुप विवेचन,* नई दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन

6. तिवारी, डॉ. रामचंद्र, (2007), *हिंदी निबंध और निबंधकार,* वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन

7. द्विवेदी, डॉ. कैलाश नाथ,(2003),*साहित्य संस्कृति चिंतन,* जयपुर, राज पब्लिशिंग हाउस

8. शम्भुनाथ, (2008),*सभ्यता से संवाद,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन

9. मिश्र, विद्यानिवास (सं), (2015), *इतिहास, परंपरा और आधुनिकता,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन

10. सिंघल, डॉ. विमला,(1998), *समकालीन लालित्य चिंतन,* जयपुर,श्याम प्रकाशन

HIND 519R आत्मकथा, जीवनी एवं डायरी

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
ESA: 100	**0**	**0**	**4**	**2**

अपेक्षित परिणाम –

- इस पाठ्यक्रम के द्वारा छात्राओं की आलोचनात्मक दृष्टि प्रखर होगी।
- आधुनिक कथेतर गद्य विधाएं के अध्ययन से साहित्य की समझ विकसित होगी।
- छात्राओं के तुलनात्मक ज्ञान के लिए सहायक होगा। उनकी शोधपरक–दृष्टि विकसित होने में मदद मिलेगी।
- बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।
- विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी यह अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगा।

आधुनिक हिंदी का जीवनीपरक साहित्य : जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र, संस्मरण, पत्र एवं डायरी आदि हैं। साहित्यकार की सृजनात्मक मानसिकता को समझने के लिए आत्मकथा, जीवनी और डायरी विधा का अभिज्ञान

अत्यंत आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम में हिंदी साहित्य के प्रमुख आत्मकथा लेखक, जीवनी लेखक एवं डायरी लेखक को सम्मिलित किया गया है। इनके अध्ययन से विद्यार्थियों को जीवन और लेखन के अन्तर्सम्बन्ध से परिचय प्राप्त होगा ।

- आत्मकथा–**क्या भूलूं क्या याद करूँ––**डॉ. हरिवंश राय बच्चन, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 2013 (व्यक्तित्व, आत्म और समाज, साहित्यिकता)

- जीवनी–**आवारा मसीहा**–––विष्णु प्रभाकर, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 2012 (हिंदी जीवनी साहित्य और आवारा मसीहा, लेखन और जीवन, बंगला–संस्कृति)

- डायरी–**मोहन राकेश की डायरी**–मोहन राकेश, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 1985 (हिंदी डायरी लेखन और मोहन राकेश की डायरी, व्यक्तित्व, साहित्यिक चिंतन)

सहायक पुस्तकें –

1. चन्द्र भाटिया, डॉ. कैलाश, (1998), *साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएँ,* नई दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन
2. धवन, डॉ. मधु, (2008), *साहित्यिक विधाएः सैद्धांतिक पक्ष,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
3. तिवारी, डॉ. रामचंद्र, (2015), *हिन्दी का गद्य साहित्य,* वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन
4. गुप्त, गणपतिचंद्र, *साहित्यिक निबंध,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
5. असद, माजदा, (1986), *हिंदी गद्य की विधाएँ,* नई दिल्ली, ग्रन्थ अकादमी
6. सिंहल, डॉ. शशि भूषण, (2002*), हिंदी साहित्य विधाएँ और दिशाएं,* दिल्ली, आधुनिक प्रकाशन
7. भाटिया, डॉ. कैलाशचंद्र, (1979), *हिंदी साहित्य नवीन विधाएँ,* दिल्ली, यूनाइटेड बुक हाउस
8. देसाई, डॉ. बापूराम, (2016*), डायरी साहित्य विधा शास्त्र और इतिहास,* कानपुर, गरिमा प्रकाशन
9. सिंह, डॉ. कमलेश, (1989), *हिंदी आत्मकथा : स्वरुप व साहित्य,* दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस

10. डॉ. हरिमोहन, (1997), *साहित्यिक विधाएं : पुनर्विचार*, नयी दिल्ली, वाणी प्रकाशन

ई–सामग्री स्रोत :

https://epgp.inflibnet.ac.in/

HIND 520R अनूदित साहित्य

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
ESA: 100	**0**	**0**	**4**	**2**

अपेक्षित परिणाम –

- इस पाठ्यक्रम के द्वारा छात्राओं को भारतीय अनूदित साहित्य व काव्य के विषय में सर्वांगीण जानकारी प्राप्त होगी।
- भारतीय साहित्य का अध्ययन छात्राओं के तुलनात्मक ज्ञान के लिए सहायक सिद्ध होगा
- छात्राओं की शोधपरक–दृष्टि विकसित होने में मदद मिलेगी।
- बौद्धिक क्षमता का विकास होगा।
- विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए भी यह अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगा।

वैश्वीकरण के युग में भाषा और साहित्य एक दूसरे से जुड़ गए हैं। भारतीय विद्यार्थियों को भारतीय भाषाओं और साहित्य के अंतर्संबंध का परिचय होना आवश्यक है। इसको ध्यान में रखते हुए अनूदित साहित्य के इस पाठ्यक्रम में भारतीय साहित्य की समृद्ध रचनाओं एवं रचनाकारों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इससे भाषा, साहित्य और संस्कृति विषयक ज्ञान में वृद्धि होगी।

- मराठी नाटक–**घासीराम कोतवाल**–विजय तेंदुलकर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1972, (ऐतिहासिकता, प्रगतिशीलता, रंगमंचीयता)
- ओडिया उपन्यास–**आदिभूमि**–प्रतिभा राय, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2001, (ओडिया उपन्यास, आदिवासी विमर्श, आदिवासी संस्कृति)
- उर्दू आत्मकथा–**कागजी है पैरहन**– इस्मत चुगताई, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004, (नारी विमर्श, आत्म और समाज, जीवन संघर्ष)

सहायक पुस्तकें –

1. माचवे, प्रभाकर, (2005), *आज का भारतीय साहित्य,* नई दिल्ली, साहित्य अकादमी
2. तिवारी, सं. सियाराम, (2015), *भारतीय साहित्य की पहचान,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
3 गुप्ता, रमणिका, (2017), *आदिवासी : विकास और विस्थापन,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन
4 गुप्ता, रमणिका, (2017), *आदिवासी साहित्य–यात्रा,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन,
5. तनेजा, जयदेव, (2017), *आधुनिक भारतीय नाट्य – विमर्श,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन
6. राजहंस, रमेश, (2017), *नाट्य प्रस्तुति : एक परिचय,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन
7. गौतम, मूलचंद, (2017), *भारतीय साहित्य,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन
8. आरसु, (2017), *भारतीय साहित्य,* नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन
9. खेतान, प्रभा, (2017), *उपनिवेश में स्त्री,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
10. कस्तवार, रेखा, (2017), *स्त्री चिंतन की चुनौतियां,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

ई–सामग्री स्रोत :

http://egyankosh.ac.in/

HIND 522R समकालीन हिन्दी कविता

Max. Marks : 100	**L**	**T**	**P**	**C**
ESA: 100	**0**	**0**	**4**	**2**

अपेक्षित परिणाम –

1. समकालीन साहित्य के विकास और विस्तार से परिचित हो सकेंगी।
2. समकालीन कविता से प्रमुख कवियों के वैचारिक और रचनात्मक साहित्य से परिचित हो सकेंगी।
3. वर्तमान समय में कविता के समाज पर प्रभावों का विश्लेषण कर सकेंगी।
4. वर्तमान समय में मौलिक चिंतन के आयामों के आधार पर लेखन कौशल विकसित कर सकेंगी।

समकालीन कविता हिन्दी काव्य धारा की हजार वर्ष की परम्परा पर स्थापित है। इसने एक लंबे समय तक भाव और शिल्प के आंदोलनों के बाद जन्म लिया है। समकालीन कवि अपने परिवेश के प्रति सजग रहे हैं, उन्होंने जनवादी, राष्ट्रीय और मानवतावादी विचारों को अपने कथ्य का आधार बनाया। वहीं शिल्पगत स्तर पर भी उन्होंने अपने परिवेश से शब्दावली ग्रहण की है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्राएँ समकालीन हिन्दी कविता और स्वातंत्र्योत्तर काव्य की विभिन्न प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगी और परिवेशगत लेखन और वर्तमान परिदृश्य के आधार पर सृजनात्मक लेखन के विकास में समर्थ होंगी।

- **समकालीन गीतकार**

  गोपाल दास 'नीरज' – घृणा का प्रेम से, तमाम उम्र मैं, अब तो मजहब कोई, अब जमाने को खबर कर दो। (भावगत एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य)

  नीरज संचयन – सं. शेरजंग गर्ग, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2014

  दुष्यंत कुमार – मत कहो आकाश में, ईश्वर को सूली, मंत्री की मैना, सवाल (भावगत एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य)

  हमारे लोकप्रिय गीतकार : दुष्यंत कुमार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009

- **जनवादी कविता**

  केदारनाथ सिंह – पाण्डुलिपियाँ, बर्लिन की टूटी दीवार को देखकर, माँ – सुई और तागे के बीच में, इस विशाल देश के। (भावगत एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य)

  केदारनाथ सिंह : पचास कविताएँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

  कुँवर नारायण – कविता, आजकल कबीरदास, एक वृक्ष की हत्या, कागज कलम और स्याही। (भावगत एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य)

  कुँवर नारायण : प्रतिनिधि कविताएँ, राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2008

- **अद्यतन कविता**

  अरूण कमल – नये इलाके में, श्राद्ध का अन्न, अमरफल, उधर के चोर। (भावगत एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य)

  अरूण कमल : पचास कविताएँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011

डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' – कोई मुश्किल नहीं, संकल्प लिया, इंसान ढूढ़ों कहाँ है, दुनिया में फिर, कोई मुश्किल नहीं – डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', विनसर पब्लिकेशन, देहरादून, 2005।

कंधार की आँखों पर पट्टी – संघर्ष जारी है – डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' , हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, 2005।

भारत देश महान – मातृभूमि के लिए –डॉ. रमेश

पोखरियाल 'निशंक', हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर, 2009। (भावगत एवं शिल्पगत वैशिष्ट्य)

सहायक पुस्तकें –

1. गौडे, विजय महादेव, (2011), *नीरज का प्रेम काव्य एक अनुशीलन,* कानपुर, रोली बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट .लिमिटेड
2. श्रीवास्तव, परमानंद, (1998*), समकालीन कविता का यथार्थ,* नई दिल्ली, लोकभारती
3. यायावर, भारत, (सं.), (2004), *कवि केदारनाथ सिंह* ,नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
4. मेहरोत्रा, अनिल, (2008), *कुँवर नारायण और उनका साहित्य,* नई दिल्ली, ज्ञानभारती
5. कंवर, सुमन, (2010), *समकालीन कविता का शैल्पिक परिप्रेक्ष्य,* जयपुर, गौतम बुक कंपनी
6. रावत, भगवत, (2006) *कविता का दूसरा पाठ और प्रसंग,* नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
7. शर्मा, योगेन्द्र नाथ 'अरूण', (2019), *डॉ. निशंक के काव्य में इंद्रधनुषी चिंतन,* बिजनौर, हिन्दी साहित्य निकेतन
8. शुक्ल, विनोद कुमार, (2010) *कविता से लम्बी कविता,* नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन
9. अरूण, नागेंद्र ध्यानी (डॉ.), '(2019) *निशंक की सृजन यात्रा,* बिजनौर, हिन्दी साहित्य निकेतन